



सत्यमेव जयते



सतलुज धारा 2022-23

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़



नराकास, चण्डीगढ़ द्वारा कार्यालय को दिए गए पुरस्कार ।





2022-23
दशरुजधाश

संरक्षक



अमरीश कुमार शर्मा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक



राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

उप-संपादक



अश्वनी कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सह-संपादक



कृष्णा कुमारी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता। बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह तो स्पष्ट है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है, वहां समझने की शक्ति मंद पड़ जाती है। हमारे मुल्क की संस्कृति एक ही है। यह हिन्दी संस्कृति है।



- सरदार वल्लभ भाई पटेल

क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, प्लॉट सं.-03, सैक्टर-19ए
मध्य मार्ग, चंडीगढ़-160019

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

"हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।"



अनुक्रमणिका

| 9क्र. | विषय | रचनाकार (श्री/सुश्री)/संदर्भ | पृष्ठ |
|-------|---|--|-------|
| 1. | संदेश | महानिदेशक, वित्त आयुक्त, (राजभाषा) बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशा. तथा रा.भा.) | i-iii |
| 2. | संरक्षक की कलम से/संपादकीय | अमरीश कुमार शर्मा, राजेश शर्मा | 1-2 |
| 3. | कर्मचारी राज्य बीमा निगम | सुशील कुमार | 3-4 |
| 4. | एक असली दोस्त | कर्ण सिंह | 5 |
| 5. | बीमाकृत व्यक्तियों के उद्गार – साभार | .. | 6 |
| 6. | यात्रा वृत्तांत | एक परिचय | 7 |
| 7. | मेरा अनुभव ज्योतिर्लिंग यात्रा | ए.के. शर्मा | 8-9 |
| 8. | सिफती का घर – अमृतसर | गौरव नंदा | 10-11 |
| 9. | हरिद्वार यात्रा का वर्णन | अनन्या | 12 |
| 10. | कविता | एक परिचय | 13 |
| 11. | मेरे पिता को समर्पित | तृप्ति दीक्षित | 14 |
| 12. | खुशी | अनीश सूद | 15 |
| 13. | तुम्हारे लिए ठहरा | हर्ष जिंदल | 16 |
| 14. | चल राही | विवेक कौशल | 17 |
| 15. | जिन्दगी | जगदीश चन्द | 17 |
| 16. | चुनाव का दौर | संदीप पाँचाल | 18 |
| 17. | तुम्हारी सफलता | हर्ष जिंदल | 19 |
| 18. | हँसते-हँसते | साक्षी शर्मा | 20 |
| 19. | चुटकले | अनीश सूद | 20 |
| 20. | विचार अमृत | एक परिचय | 21 |
| 21. | सकारात्मक सोच | गौरव नंदा | 22 |
| 22. | आत्मा | कुसुम लता | 23 |
| 23. | मिलावट का कहर | अश्वनी कुमार | 24 |
| 24. | गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर | राजेश शर्मा | 25-26 |
| 25. | कलियुग के सत्य, विश्वगुरु | अनिल विज | 26 |
| 26. | यू पी आई ट्रांजैक्शन – डिजिटल लेन-देन की रीढ़ | सुशील सचदेवा | 27 |
| 27. | चैट जीपीटी एक नए युग की दस्तक | सुनील कुमार | 28-29 |
| 28. | दिखावे की शान पड़ती है खुद पर भारी | वेद प्रकाश | 30 |
| 29. | माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा कार्यालय के सफल निरीक्षण की स्मृतियाँ | झलकियाँ | 31 |
| 30. | खेल के मैदान से | झलकियाँ | 32 |
| 31. | माननीय श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री रामेश्वर तेली जी के क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ एवं पंजाब दौरे की झलकियाँ | झलकियाँ | 33 |
| 32. | विशेष सेवा पखवाड़ा 2023 | झलकियाँ | 34 |
| 33. | गणतंत्र दिवस समारोह 2023 | झलकियाँ | 35 |
| 34. | सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ | झलकियाँ | 36 |
| 35. | अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 | झलकियाँ | 37 |
| 36. | राजभाषा | एक परिचय | 38 |
| 37. | क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन | विस्तृत रिपोर्ट | 39-43 |
| 38. | राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह 2022 का आयोजन | विस्तृत रिपोर्ट | 44-47 |
| 39. | स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शाखा कार्यालय, अबोहर, पंजाब प्रथम पुरस्कार से सम्मानित | झलकियाँ | 48 |



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)



पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in



डॉ. राजेन्द्र कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा अपनी हिन्दी गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' का अगला अंक प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा 'हिन्दी' के प्रति उनके प्रेम को भी प्रकट करता है। आशा है कि गृह पत्रिका का यह अंक कार्यालय में हिन्दी की प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करेगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

राजेन्द्र कुमार
(डॉ. राजेन्द्र कुमार)



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)



पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in



टी. एल. यादेन
वित्त आयुक्त

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की हिंदी गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका निगम कार्मिकों की अभिव्यक्ति के लिए एक अच्छा मंच है और इसके माध्यम से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है। विश्वास है कि यह अंक ज्ञानवर्धक और रुचिपूर्ण होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

टी. एल. यादेन
(टी. एल. यादेन)



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt of India)



पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in




दीपक जोशी
बीमा आयुक्त
(कार्मिक एवं प्रशासन तथा राजभाषा)

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी हिन्दी गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' के अगले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। हिन्दी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया है तथा शासकीय कामकाज में इसका प्रयोग करने संबंधी कुछ लक्ष्य भी निर्धारित किए गए हैं जिनकी प्राप्ति और हिन्दी प्रयोग में वृद्धि के लिए हम सभी कार्मिक कटिबद्ध हैं। आशा है कि पत्रिका के प्रकाशन से सभी कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ेगी और साथ ही उन्हें अपने भावों और विचारों को राजभाषा हिन्दी में व्यक्त करने का भरपूर अवसर मिलेगा।

'सतलुज धारा' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।


(दीपक जोशी)

संरक्षक की कलम से...



क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ के लिए वर्ष 2022-23 चुनौतीपूर्ण रहा है। वर्ष के प्रारंभ में ही माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कार्यालय का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि माननीय समिति द्वारा हमारे कार्यालय के कामकाज की काफी सराहना की गई। निःसंदेह हमारे कार्यालय में हिंदी में कामकाज की स्थिति काफी अच्छी है। मुझे पूर्ण आशा है कि इस निरीक्षण से मिली नई ऊर्जा से हम राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को ओर बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे। फरवरी 2023 में निगम की बैठक भी चंडीगढ़ में आयोजित की गई तथा इसकी व्यवस्था का दायित्व भी क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ को सौंपा गया। क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने इन कार्यक्रमों में भरपूर सहयोग किया तथा इसके लिए मैं सभी को उनके सक्रिय सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्मिक हिंदी को अच्छे से पढ़, लिख व समझ सकते हैं या यूँ कहें कि हिंदी भाषी हैं। वैसे भी हिंदी सरल भाषा है, साथ ही सहज उपयोगी भी है। हिंदी में काम करना हमारे लिए गर्व की बात है। प्रत्येक विकसित राष्ट्र की अपनी राजभाषा है और वे सभी अपनी ही भाषा में कार्य करते हैं। आज हिंदी देश के कोने-कोने में बोली व समझी जाती है। अंग्रेजी केवल धारणा की भाषा है, उसे हमें अपनी धारणा से निकालना होगा। कार्मिकों के मौलिक लेखन द्वारा ही किसी क्षेत्र विशेष की सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों को अच्छे से समझा जा सकता है क्योंकि अपने विचारों/कल्पनाओं को साकार करने के लिए हम अपने परिवेश एवं अपनी संस्कृति को ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मूर्त रूप प्रदान करते हैं। गृह पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य भी तो यही है कि राजभाषा हिंदी का राजकीय कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग हो। अपने इस दायित्व को भी यहां पर तैनात कार्मिकों ने बड़े सहज भाव से निभाया है।

हमारे कार्यालय में तैनात सभी अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति सदैव सजग रहे हैं। 'ख' क्षेत्र में स्थित होने के उपरान्त भी पंजाब एवं चंडीगढ़ क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कार्यालयीन कामकाज में हो रहा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पंजाब एवं चंडीगढ़ क्षेत्र के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने हृदय में दृढ़ संकल्प लेकर कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे तथा राजभाषा संबंधी नियमों/विनियमों का गंभीरता से अनुपालन करेंगे।

आशा करता हूँ कि 'सतलुज धारा' का यह अंक भी अपने प्रबुद्ध पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। पाठकों के अनमोल विचार हमारे प्रेरणा स्रोत हैं जिनका हमें बेसब्री से इंतजार रहता है। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में.....

(अमरीश कुमार शर्मा)
क्षेत्रीय निदेशक



संपादकीय...



क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ की गृह पत्रिका “सतलुज धारा” का वर्ष 2022-23 का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अति हर्ष की अनुभूति हो रही है। जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि माह अप्रैल 2022 में माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कार्यालय का निरीक्षण किया गया था। यह हम सबके लिए एक अलग-सा अनुभव रहा। माननीय समिति द्वारा किया गया कार्यालय का निरीक्षण सफल रहा तथा निरीक्षण उपरांत यह पाया कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़ में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति काफी अच्छी है। यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारी / कर्मचारी इस उपलब्धि के लिए प्रशंसा के पात्र हैं। क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के समस्त अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा नियमों / विनियमों के अनुपालन के प्रति निःसंदेह बहुत ही सजग एवं गंभीर हैं। राजभाषा हिंदी के प्रति कार्मिकों की निष्ठा के कारण ही गृह पत्रिका “सतलुज धारा” नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। गृह पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय विशेष के कार्मिकों की लेखन की अभिरुचि जागृत करना होता है, साथ ही पत्रिका से यह अपेक्षा भी रहती है कि वह कार्यालय विशेष की प्रमुख गतिविधियों को उजागर करे। “सतलुज धारा” इस दिशा में निरंतर गतिशील है। ‘सतलुज धारा’ के वर्ष 2022-23 अंक के लिए ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय रचनाएं उपलब्ध करवाने के लिए भी मैं सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

क्षेत्रीय कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ तथा निगम मुख्यालय द्वारा समय-समय पर उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन तथा गृह पत्रिका ‘सतलुज धारा’ के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए पुरस्कृत होता रहा है। इस वर्ष के दौरान भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से क्षेत्रीय कार्यालय को विगत वर्षों में गृह पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन व राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कई पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है। इन उपलब्धियों के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का उनके सक्रिय सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

अंत में, मैं पत्रिका के संरक्षक, परामर्शदाता, मार्गदर्शक क्षेत्रीय निदेशक महोदय तथा उन सभी निगम कार्मिकों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनकी रचनात्मक अभिरुचि के फलस्वरूप ही “सतलुज धारा” निरंतर प्रवाहित हो रही है। आशा है कि ‘सतलुज धारा’ का यह अंक सभी पाठकों की कसौटी पर खरा उतरेगा। आपके तार्किक एवं मूल्यवान सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

राजेश शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)



सुशील कुमार
सहायक निदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

(विश्व की सबसे बड़ी व श्रेष्ठ सामाजिक सुरक्षा योजना)

दर्द का अहसास वही कर पता है जो कभी किसी पीड़ा से स्वयं गुजरा हो। स्वतंत्रता के पश्चात् जब देश विकास की ओर अग्रसर था, उसी समय करखानों / फैक्ट्रियों में श्रमिकों की मांग बढ़ी और समय के चलते वे बीमार / घायल भी हुए। ऐसे में आवश्यकता थी श्रमिक वर्ग को एक ऐसी सामाजिक सुरक्षा की जो उन्हें समयानुसार धन से, चिकित्सा से मदद दे सके और ऐसे समय में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की सामाजिक सुरक्षा की नींव पड़ी जो आज विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा योजना है और करोड़ों श्रमिकों के लिए आशा का दीप है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम उनके आशादीप को प्रज्ज्वलित रखने के लिए पंचदीप के तहत कार्य करता है। निगम के पंचदीप के तहत क्या-क्या योजनाएं हैं। आइए उसका एक अवलोकन कर लें।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक बहु आयामी सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था है, जो कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की स्थापना कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 के अन्तर्गत हुई तथा कर्मचारी राज्य बीमा योजना वर्ष 1952 में दिनांक 24 फरवरी को कानपुर और दिल्ली से आरम्भ की गई। कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक शीर्ष इकाई है जिसमें कर्मचारियों, नियोजकों, केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, संसद, चिकित्सा वर्ग से जुड़े हुए लोगों के प्रतिनिधि होते हैं। अधिनियम के अन्तर्गत निगम को योजना से संबंधित विनियम बनाने की शक्तियां प्रदान की गई हैं। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ही अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कर्मचारी राज्य बीमा योजना का संचालन करता है जो कि स्व-वित्त पोषित सामाजिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य बीमा योजना है। कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अन्तर्गत निगम द्वारा कर्मचारियों को जो कि व्याप्त इकाइयों में कार्यरत हों, समुचित सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है। वे कर्मचारी जो 21,000/- रुपये प्रतिमाह या उससे कम वेतन पाते हैं, इसके पात्र हैं। इसमें कर्मचारियों का योगदान 0.75 प्रतिशत तथा नियोजक का योगदान 3.25 प्रतिशत होता है। यह सामाजिक सुरक्षा निम्नलिखित हितलाभों के रूप में प्रदान की जाती है:

1. चिकित्सा हितलाभ :- बीमाकृत व्यक्ति को बीमा योग्य रोजगार में आने के पहले दिन से ही चिकित्सा हितलाभ मिलता है। यह हितलाभ बीमाकृत व्यक्ति के पूरे परिवार को मिलता है जिसमें पत्नी या पति, बच्चे व आश्रित माता-पिता शामिल हैं। सेवानिवृत्त बीमाकृत व्यक्तियों और उसके पति / पत्नी को रुपये 120/- के एकमुश्त वार्षिक भुगतान पर चिकित्सा देखरेख प्रदान की जाती है।

2. बीमारी हितलाभ :- जब कोई बीमाकृत व्यक्ति बीमार हो जाता है तथा अपने काम पर नहीं जा पाता है तो उसे अक्षमता की अवधि में मजदूरी में होने वाली क्षति की पूर्ति निगम द्वारा नकद हितलाभ के रूप में की जाती है। कर्मचारी को प्रमाणित बीमारी अवधि के दौरान एक वर्ष में अधिकतम 91 दिनों के लिए उसकी दैनिक मजदूरी के 70 प्रतिशत की दर से नकद हितलाभ के रूप में देय होता है। बीमारी हितलाभ की पात्रता के लिए बीमाकृत कर्मचारी द्वारा 6 महीनों की अंशदान अवधि में 78 दिनों के लिए अंशदान अदा किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त 34 घातक और दीर्घकालीन बीमारियों के मामलों में विस्तारित बीमारी हितलाभ दिया जाता है जो दैनिक वेतन के 80% की दर से दो वर्षों तक विस्तारित किया जा सकता है। इसके अलावा बीमाकृत व्यक्तियों द्वारा बंध्यकरण कराने पर वर्धित बीमारी हितलाभ पुरुष और महिला कर्मचारियों को क्रमशः 7 दिन / 14 दिन के लिए पूर्ण दैनिक वेतन के बराबर देय होता है।

3. प्रसूति हितलाभ :- महिला कर्मचारियों को प्रसूति हितलाभ 26 सप्ताह तक और गर्भपात मामले में 6 सप्ताह तक मिलता है। यदि प्रसूति, गर्भावस्था इत्यादि के कारण महिला बीमार हो जाती है तो चिकित्सा परामर्श पर नकद हितलाभ की अवधि एक माह तक बढ़ायी जा सकती है। इस हितलाभ की दर कर्मचारी के पूरे वेतन के बराबर होती है। नकद हितलाभ के साथ-साथ महिला कर्मचारी को चिकित्सा हितलाभ भी देय होता है। पात्रता के लिए बीमाकृत महिला कर्मचारी द्वारा पूर्ववर्ती दो अंशदान अवधियों में 70 दिनों के लिए अंशदान का भुगतान किया जाना चाहिए।

4. अपंगता हितलाभ :- यदि कोई कर्मचारी काम के दौरान अथवा काम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है तो उसे रोजगार दुर्घटना



मानते हुए कर्मचारी को अक्षमता की अवधि में अस्थायी अपंगता हितलाभ मिलता है जो कि उसके दैनिक वेतन के 90 प्रतिशत के बराबर होता है। यह हितलाभ कर्मचारी को बीमा योग्य रोजगार में आने के पहले दिन से देय होता है।

जब बीमाकृत व्यक्ति की अस्थायी अपंगता की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा उस रोजगार दुर्घटना से यदि कोई स्थायी अपंगता बीमाकृत व्यक्ति के शरीर में आ जाती है तो चिकित्सा बोर्ड द्वारा निर्धारित अर्जन क्षमता की हानि की प्रतिशतता पर निर्भर यह हितलाभ मासिक भुगतान के रूप में उस बीमाकृत व्यक्ति को पूरा जीवन स्थायी अपंगता हितलाभ के रूप में मिलता है।

5. आश्रितजन हितलाभ :- यदि रोजगार चोट या व्यावसायिक दुर्घटना के कारण बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसके आश्रितों को आश्रितजन हितलाभ मिलता है। यह दैनिक वेतन के 90% की दर से मासिक भुगतान के रूप में अदा किया जाता है। बीमाकृत व्यक्ति के आश्रितों में उसकी विधवा पत्नी, विधवा माँ, बच्चे शामिल हैं। यह हितलाभ पुत्र को 25 वर्ष तक तथा पुत्री को अविवाहित रहने तक की अवस्था में मिलता है। यदि मृतक बीमाकृत व्यक्ति का उपर्युक्त श्रेणी में कोई परिवार का सदस्य मृत्यु के समय नहीं है तो आश्रितजन हितलाभ बीमाकृत व्यक्ति के आश्रित माता-पिता को भी मिल सकता है।

उपर्युक्त हितलाभों के अतिरिक्त निगम द्वारा कुछ अन्य हितलाभ भी कर्मचारियों को प्रदान किए जाते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है:-

- क. अंत्येष्टि खर्च :** बीमाकृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार करने के लिए संबंधियों को रुपये 15,000/- का भुगतान किया जाता है।
- ख. प्रसूति खर्च :** बीमाकृत महिला या बीमाकृत व्यक्ति को उसकी पत्नी की प्रसूति ऐसे स्थान पर होने की स्थिति में जहाँ क. रा. बी. योजना के अंतर्गत आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, रुपये 7500/- तक का भुगतान किया जाता है।
- ग. व्यावसायिक पुनर्वास भत्ता :** व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र में व्यावसायिक पुनर्वास प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे स्थायी अपंग बीमाकृत व्यक्ति को व्यावसायिक पुनर्वास भत्ता दिया जाता है।
- घ. पुनर्वास भत्ता :** बीमाकृत व्यक्तियों के शारीरिक निःशक्तता की स्थिति में कृत्रिम अंग केंद्र (Artificial Limb Centre) में कृत्रिम अंग लगाने या मरम्मत या बदलने के दौरान भत्ता दिया जाता है।
- ङ. बेरोजगारी भत्ता :** बेरोजगार भत्ता की यह योजना 01.04.2005 में आरम्भ की गई थी। तीन या अधिक वर्षों तक बीमाकृत रहने के बाद जो बीमाकृत व्यक्ति कारखाने / संस्थान के बंद होने, छूटनी होने या स्थायी अशक्तता के कारण बेरोजगार हो जाता है तो ऐसे कर्मचारी बेरोजगारी भत्ता के पात्र होंगे। यह भत्ता अधिकतम दो वर्ष की अवधि के लिए देय होता है व हितलाभ की दर मजदूरी दस के 50 प्रतिशत के बराबर होती है।

इसके अतिरिक्त कोरोना महामारी के समय रोजगार छूटने की स्थिति में सरकार ने लोगों की मदद के लिए अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना शुरू की। योजना के तहत बीमाकृत व्यक्तियों को जीवनकाल में एक बार 90 दिनों तक दैनिक वेतन के 50 प्रतिशत के बराबर देय है, उस स्थिति में जब बीमाकृत व्यक्ति बेरोजगारी के तुरंत पहले दो वर्षों की न्यूनतम अवधि के लिए बीमा योग्य रोजगार में रहा हो।

- च. मेडिकल / डेन्टल कॉलेज में बीमाकृत व्यक्ति के बच्चों को दाखिला:** कर्मचारी राज्य बीमा निगम मेडिकल / डेन्टल कॉलेज में बीमाकृत व्यक्ति के बच्चे को पाँच प्रतिशत कोटा के तहत दाखिला दिया जाता है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कल्याण भावना का द्योतक पंचदीप अपने अनेक हितलाभों की ज्योति से लाखों परिवारों में अपना प्रकाश बिखेर रहा है। विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा अपनी इन्हीं खूबियों के कारण धरोहर का रूप ले रही है। अपनी अस्मिता, संस्कृति, संस्कार लेकर श्रमिक वर्ग गाँव छोड़कर कारखानों में राष्ट्र का निर्माण करने में योगदान देता है। बीमार / घायल होने पर वह मायूस न हो जाएं, चिंतित न रहें, इसी पावन उद्देश्य को लेकर चिंता से मुक्ति की यह सामाजिक सुरक्षा श्रमिक की ढाल बन रही है। इसके अंतर्गत श्रमिक वर्ग सुरक्षित है और योजना के सही संचालित होते रहने पर भविष्य में भी सुरक्षित रहेगा।



कर्ण सिंह
उप निदेशक
(सेवानिवृत्त)

"एक असली दोस्त"

जरूरत में काम आने वाला दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है। समाज में अलग-अलग तरह के लोग होते हैं। कुछ मेहनती, कुछ आलसी, कुछ धोखेबाज और कुछ ईमानदार होते हैं। कुछ सज्जन हैं, कुछ असभ्य हैं, कुछ कानून का सम्मान करते हैं, कुछ कानून तोड़ते हैं। कुछ अपने माता-पिता को बुढ़ापे में छोड़ देते हैं और कुछ उन्हें अपने "आराध्य" के रूप में पूजते हैं। कुछ केवल लगन और समर्पण से महानता प्राप्त करते हैं, कुछ अवांछित चीजों में लिप्त होकर अपना कीमती जीवन बर्बाद कर देते हैं। कुछ धरती के रतन होते हैं। आगे आएँ और स्कूल, अस्पताल और धर्मशालाएं खोलकर समाज सेवा करें और जरूरतमंदों की मदद करें।

क.रा.बी. - अधिनियम 1948 के (34) के रूप में एक अच्छा संकेत श्रमिक वर्ग के मित्र के रूप में अस्तित्व में आया जिसने उन्हें शोषण करने वाले नियोक्ताओं के चंगुल से छुड़ाया और उन्हें कई हितलाभों जैसे बीमारी हितलाभ, अस्थायी अपंगता हितलाभ, स्थायी अपंगता हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, विस्तारित बीमारी हितलाभ, वर्धित बीमारी हितलाभ और अंत्येष्टि व्यय के रूप में अन्य ढेरों सुविधाओं के साथ सशक्त बनाया।

क.रा.बी. अधिनियम के अंतर्गत व्याप्त कामगार जरूरत पड़ने पर ऊपर दिए गए सभी हितलाभों का लाभ उठा सकते हैं और अब बिना किसी शोषण के गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जैसे हमारे महान नेता भारत में 14 घंटे से 8 घंटे का कार्य दिवस लेकर आए और श्रमिकों के लिए लागू करवाया।

श्रम विभाग की स्थापना नवंबर 1937 में हुई थी और डॉ. अम्बेडकर ने जुलाई 1942 में श्रम मंत्रालय संभाला था। महिला श्रमिकों के लिए कानून जैसे खान प्रसूति अधिनियम, महिला कल्याण निधि, महिला और बाल श्रम संरक्षण अधिनियम बनाए गए और महिलाओं के लिए प्रसूति हितलाभ, कोयला खदानों में भूमिगत कार्य में महिलाओं के रोजगार पर प्रतिबंध की बहाली की गई।

डॉ. अम्बेडकर से प्रेरित होकर, वर्तमान सरकार ने श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए कदम उठाए हैं। उदाहरण के लिए, "प्रधानमंत्री श्रम योगी मान धन योजना" को फरवरी-2019 में असंगठित श्रमिकों की वृद्धावस्था में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए शुरू किया गया था।

क.रा.बी. अधिनियम सही अर्थों में मजदूर वर्ग का मित्र है। इस महान रिश्ते को क.रा.बी. निगम के पदाधिकारियों द्वारा बीमाकृत व्यक्तियों की सेवा प्रदान करके बनाए रखा जा सकता है, जिन्हें निगम द्वारा एक दोस्त की तरह मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ वीआईपी के रूप में नामित किया गया है। कर्तव्य पहले आता है। अच्छा करो, अच्छा पाओ और क.रा.बी. निगम के झंडे को गर्व से ऊंचा रखो।





बीमाकृत व्यक्तियों के उद्गार - साभार

मेरा नाम सनदीप सिंह है व मेरा बीमांक 1214966441 है। मैं सेतियाइंडस्ट्रीज, रूपाना में एलेक्ट्रिकल विभाग में हैल्पर के पद पर कार्यरत था। दिनांक 30.12.2019 को फैक्ट्री से ड्यूटी खत्म करने के पश्चात मैं अपने घर जा रहा था। रास्ते में मेरा एक्सिडेंट हो गया। जिसमें मेरी बाई टॉग, बाई बांह व गर्दन पर काफी चोट लग गई जिस कारण मैं काम-काज करने में असमर्थ हो गया। मेरे घर में मैं, मेरी पत्नी, मेरी दो छोटी बच्चियाँ हैं व बजुर्ग मात-पिता हैं और मैं अपने घर में एक मात्र कमाने वाला सदस्य हूँ और मेरा घर के सभी सदस्य मुझ पर ही आश्रित हैं। मुझे अपने इलाज के साथ-साथ मेरे परिवार का पालन-पोषण भी करना था।



ऐसे समय में जब मैं पूरी तरह हताश होने लगा था तो कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने मुझे बहुत सहारा दिया। मुझे चोट लगने की तारीख 30.12.2019 से चोट से उबरने तक की तिथि 30.08.2021 तक शाखा कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अबोहर द्वारा अस्थाई अपंगता हितलाभ का यथासमय भुगतान किया जाता रहा। चोट के कारण मेरी बाई बांह पूरी तरह नाकारा हो गई है और डॉक्टर द्वारा बताया गया है कि भविष्य में भी इसके ठीक होने के आसार बहुत कम हैं। इस बात से भी मैं बहुत चिंतित था कि आगे घर का गुजारा कैसे कर पाऊँगा। किन्तु शाखा कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा एक बार फिर मेरी चिंता को हर लिया जब आज दिनांक 07.04.2022 को कार्यालय द्वारा मुझे दूरभाष से सूचित किया गया कि मुझे मेरी रोजगार चोट जो दिनांक 30.12.2019 को लगी थी के संबंध में स्थायी अपंगता हितलाभ की पेंशन लगा दी गई है। जिसकी दर मेरी अस्थाई अपंगता हितलाभ की दर का 60 प्रतिशत (165/- दैनिक) है। जब तक मैं चिकित्सा छुट्टी पर रहा कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने मुझे बहुत सहारा दिया और उन पैसों से मुझे मेरा इलाज करवाने व अपने परिवार का पालन-पोषण करने में बहुत सहयोग मिला।

मैं विशेष तौर पर शाखा कार्यालय, अबोहर के शाखा प्रबंधक श्री नवीन कुमार जी का धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे ऐसे परिस्थिति में यथासमय अस्थाई अपंगता हितलाभ का भुगतान किया जब मैं चलने-फिरने में भी असमर्थ था। उनके द्वारा मुझे घर पर बैठे ही सभी आवश्यक दस्तावेज मंगवाकर भुगतान किया गया। अब मुझे आजीवन 60 प्रतिशत स्थाई अपंगता हितलाभ की पेंशन का भुगतान भी होगा। मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ कि मैं कर्मचारी राज्य बीमा निगम का बीमित व्यक्ति था, जिस कारण मैं अपने रोजगार में भी सुरक्षित रहा। अपने अनुभव से मैं सभी प्राइवेट कंपनियों में कार्य करने वाले कामगारों को सलाह देना चाहता हूँ कि वो सभी अपने नियोजकों को बोल कर अपने आप को कर्मचारी राज्य बीमा निगम में रजिस्टर्ड करवाएँ। थोड़े से पैसों के अंशदान से न केवल आप सुरक्षित होंगे बल्कि आपका पूरा परिवार भी सुरक्षित होगा।

धन्यवाद सहित,

सनदीप सिंह

1214966441

To
Employees State Insurance Corporation
Branch Office, ESIC Sector-29,
Chandigarh

08/07/2022

Subject: -Appreciation Letter for cooperating in settling claims.

Respected Sir,



This is to appreciate the financial support and moral help by ESIC as we lost our father in August 2018 who was Insured with ESIC Insurance no. 1708996321 We applied for occupational disease application and since then the case was pending and which has now been granted with monthly pension to us. This amount of 42 lrs/per day is sufficient for us to continue with our studies and other such expenses. We are coordinately thankful to ESIC for this assistance. In the meantime, Branch manager as well as other staff members were pretty helpful, approachable and Professional. Whenever asked they communicated updates about the claim status well on time. All staff members were humble and helping in nature. It was a good and satisfactory experience dealing with ESIC Sec-29, Chandigarh branch.

Regards:

Parmila w/o ASHOK KUMAR
Vineet Kumar S/o ASHOK KUMAR
Ekta Sharma d/o ASHOK KUMAR
#1163 Saini Vihar Ph-3, Baltana
Zirakpur (140604)
Ph no. 7837832540

यात्रा वृत्तांत

गगन चूमते पर्वत खड़े प्रहरी से शांत
मनोहर झरने गिर रहे बिना विश्राम
बह रही कहीं सरिता बिना आराम
कहीं बंजर कहीं मधुबन प्रकृति के काम

आज के इस युग में आवागमन के साधनों के चलते धरती सिमट कर रह गई है
तथा हमें देश-विदेश में घूमने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है।
हर देश में कुछ मानव निर्मित, तो कुछ प्रकृति जनित पर्यटन स्थल हैं
जिनको देखना अपने आप में एक सौभाग्य है। जहाँ इन पर्यटन स्थलों
की यात्रा हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है, वहीं हमें एक-दूसरे की
संस्कृति व रहन-सहन की जानकारी भी मिलती है।
आइए उन अनुभवों का हम भी लाभ उठाते हैं...





ए. के. शर्मा
क्षेत्रीय निदेशक

मेरा अनुभव ज्योतिर्लिंग यात्रा

कभी-कभी जीवन में कुछ ऐसा महत्वपूर्ण घटित हो जाता है जिस पर व्यक्ति महीनों आश्चर्य में डूबकर चर्चा करता रहता है। अक्सर हम ऐसी घटनाओं का जिक्र अपने निकट संबंधियों या परिचितों से भी करते हैं। इस आत्मकथात्मक लेख के माध्यम से, मैं आपको एक वास्तविक घटना से अवगत कराना चाहता हूँ। शिव का कार्य, जीवन और उनका दर्शन मुझे बहुत प्रेरित करता है। शिव के प्रत्येक ज्योतिर्लिंग की एक अद्भुत कथा है जिसका सार सुखद और अनुकरणीय है। कहा जाता है कि-

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्
उज्जयिन्यां महाकालोत्कारममलेश्वरम् ॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।

सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे।

हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।

सप्तजन्मद्वतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥4॥

उपर्युक्त श्लोक में कहा गया है कि शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों का प्रातःकाल स्मरण करने से व्यक्ति के सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। हो सकता है कि यह कथन बहुत अधिक धार्मिकता से प्रेरित हो या घोर आस्था का परिणाम हो। परंतु मैं इस चर्चा को बहुत ही वैज्ञानिक और तार्किक तरीके से रखना चाहता हूँ। श्लोक में उल्लिखित बारह ज्योतिर्लिंग, भारत भूमि के अलग-अलग हिस्सों में बिखरे हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रणपूर्वक इन द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करता है तो निश्चय ही पर्यटन के फलस्वरूप उसके ज्ञान में वृद्धि होगी और अज्ञानता के बंधन से मुक्ति मिलेगी।

इसी क्रम में, मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रसंग यहाँ रखना चाहूँगा। यह मेरे व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। शिव के दर्शन को समझने के लिए मैंने शिवस्थलों की यात्रा आरम्भ की। यात्रा के

क्रम में एक पड़ाव केदारनाथ धाम का भी सुनिश्चित हुआ। श्री केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए मैंने इंटरनेट के माध्यम से स्वयं एवं पत्नी के लिए एक हेलीकॉप्टर सेवा देने वाली कंपनी से फाटा नामक स्थान से केदारनाथ धाम के लिए माह मई, 2017 में दो टिकट बुक करवायी जिसका किराया भी ऑनलाइन भुगतान किया। मेरे द्वारा सेवा प्रदाता कंपनी को बार-बार फोन किए गए, उन्होंने मुझे आश्वासित किया कि आपकी टिकटें सुरक्षित हैं तथा उड़ान तिथि को समय से दो घंटे पहले हेलीपैड पर अवश्य पहुँच जाएं। यात्रा के एक दिन पूर्व भी पूछताछ करने पर जानकारी दी गई कि आपके हेलीकॉप्टर टिकट कन्फर्म हैं। तदनुसार, मैं अपने निवास से दिल्ली तक और फिर वहाँ से सपत्नीक नियत तिथि पर फाटा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर मैंने पुनः कंपनी के कॉल सेंटर पर फोन किया तो मुझे सूचना दी गई कि आपकी टिकटें कैंसिल कर दी गई हैं जो हमारे लिए बहुत ही कष्टदायक एवं एक मानसिक प्रताड़ना थी।

अब हमारे पास दूसरे हेलीकॉप्टर के टिकट की कोई सुविधा भी नहीं थी अचानक हुए इस धोखेबाजी से हमें बड़ा क्षुब्ध होना पड़ा। हम लोग उस समय पूरी तरह से निराशा में डूब गए। तभी हमारे साथ कुछ ऐसा घटित हुआ जो आश्चर्यजनक था। कंपनी के लोगों से हमारी बहस चल ही रही थी कि दूर खड़े एक सज्जन ने सहर्ष हमारी तरफ हाथ बढ़ाते हुए सहयोग का आमंत्रण दिया। उन्होंने हमारे लिए हेलीकॉप्टर की दो टिकटों की व्यवस्था करवाई और हम सुगमतापूर्वक अपनी यात्रा पूरी कर सके। उन्होंने अपना परिचय देते हुए

बताया कि वह सोनप्रयाग के डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर हैं। इस बात ने मुझे अचंभित कर दिया। प्रायः यह बिलकुल संभव नहीं होता कि एक सामान्य व्यक्ति से कोई जिलाधिकारी सहजता से बढ़कर हाथ मिलाएं और सहयोग का आमंत्रण दें। अक्सर ऐसे वरिष्ठ अधिकारी अपने व्यस्त कार्यक्रमों के कारण, आम लोगों के बीच तक नहीं



पहुँच पाते हैं और उनकी समस्याओं से भी अवगत नहीं हो पाते हैं। लेकिन मेरे साथ ऐसा सुखद संयोग बन जाना, कहीं ना कहीं शिवकृपा ही है जिसे मैंने अनुभव किया। चमत्कारों की आवृत्ति यहीं पर नहीं रूकी, केदारनाथ जी के दर्शन-पूजन के बाद वापसी के समय भी हमें कुछ परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। वापसी के लिए तय किए गए हेलीकॉप्टर सेवादाता ने बताया कि खराब मौसम के कारण केदारनाथ से नीचे फाटा के लिए उड़ानें रद्द की गई हैं। इस कारण हमें वही मंदिर के आसपास ठहरने का निर्णय लेना पड़ा। लेकिन आसपास किसी भी लॉज होटल या कैम्प में जगह खाली न थी। ऐसे में कुछ वर्ष पूर्व केदारनाथ धाम में घटित घटनाओं और खराब मौसम ने भी हमारे मन को और अधिक चिन्तित कर दिया। तभी कहीं से एक अनजान व्यक्ति हमारे पास आया और हमारे ठहरने के लिए मन्दिर के समीप प्रबंध की बात की। उसके मधुर व्यवहार एवं सहयोगपूर्ण स्वाभाव ने हमें अपनापन का एहसास कराया। रात के लिए हमें अच्छा आश्रय मिल गया। रात लोगों से हुई चर्चा एवं शिव महात्म्य का आनंद उठाकर ऐसा लगा जैसे स्वयं शिव ने ही हमें थोड़ा और ठहरने के लिए रोक लिया हो। सही बात है कि जब हम कभी फिसलते हैं तो गिरते वक्त आसपास की चीजों को और भी जकड़कर पकड़ लेते हैं। असुविधाओं के झटके ने जैसे हमारे पैर और भी मजबूती से केदारनाथ धाम में जमा दिए। उन दोनों महानुभवों के सहयोग से हमारी यात्रा सकुशल संपन्न हुई और हम एक अच्छा अनुभव लेकर घर वापस आए। मैं समझता हूँ कि हम सभी के जीवन में कुछ ना कुछ ऐसा घटित अवश्य होता है जो हमें बिल्कुल अचंभित कर देता है।

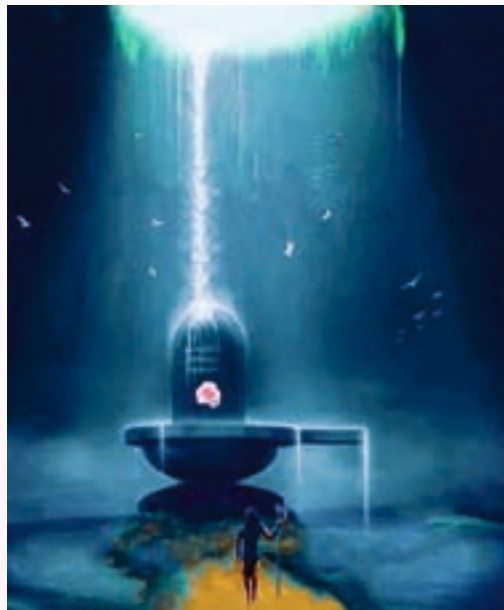
इसी क्रम से मेरे मन में शिव के

प्रति आस्था और सम्मान और अधिक बढ़ गया। शिव का औघड़ रूप सांसारिक निर्लिप्ति का प्रतीक है, फिर भी वह एक गृहस्थ हैं जो कि आम नागरिकों के लिए एक संदेश है कि गृहस्थ जीवन भी एक बड़ी समस्या है, दायित्व है, परंतु इसमें रम जाना ही उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

सागर मंथन का प्रसंग, जब शिव विषपान करते हैं तो अति विषाक्तता से उनका कंठ नीला पड़ जाता है। नीलकंठ का यह

उपक्रम उनकी महानता का प्रतीक है कि उन्होंने पूरे दायित्व के साथ सामाजिक बुराई, कटुता, अभक्ष्य और विषाक्तता का पान कर इस लोक को निर्मल बनाने का प्रण लिया। उनके जीवन का हर पहलू अचरजपूर्ण है। वह कहीं पर 'भोलेनाथ' हैं तो कहीं पर 'महाकाल' भी हैं। शिव की इन गूढ़ बातों को समझने के लिए उनकी नृत्य विधाओं को समझना जरूरी है। शिव की विभिन्न मनःस्थितियों में अलग-अलग प्रकार की नृत्य भंगिमाएं हैं। इनमें शूलपाणि नृत्य, नटराज नृत्य और तांडव नृत्य मुख्य हैं। 'शूलपाणिः नृत्य' सृजन का प्रतीक है। 'नटराज नृत्य' इस संसार की नट समान हो रही विभिन्न गतिविधियों का प्रतीक है और शिव का तांडव नृत्य इस संसार के संहार का प्रतीक है अर्थात् मृत्यु के सत्य को भी वह अपने इस नृत्य विधा के माध्यम से लोगों के समक्ष रखते हैं। इस प्रकार का सम्पूर्ण जीवन एक विराट दर्शन है जो अनुकरणीय है। उनकी इसी महिमा को स्वीकार करते हुए श्रीराम स्वयं कहते हैं-

"शिवद्रोही मोर दास कहावा, ते नर मोहि सपनेहुं नहीं भावा।" वे राम के भी ईष्ट हैं तो रावण के भी पूज्य हैं।



लंका विजय के लिए श्रीराम सेतुबन्ध के लिए रामेश्वर लिंग की पूजा करते हैं तो विजय का वरण करने के लिए रावण 'शिवताण्डवस्रोत' के माध्यम से शिव की कठिन तपस्या करता है। भला विजयश्री का आशीर्वाद किसे मिले? इसका निर्णय तो शिवजी जैसे समझ से परे, जटिल व्यक्तित्व के स्वामी से ही संभव हो सकता है। 'रामचरित मानस' की यह पंक्ति शैवमत व वैष्णवमत के पंथियों को भी एकजुट होने का संदेश देती है। ध्यान देने योग्य बात है कि तुलसीदास जी राममार्गी संत होते हुए भी शिव की उपेक्षा न कर सके। शिव त्याग, योग,

व्रत, गृहस्थ और वैराग्य के दाता हैं। वे भूत-प्रेतों के संगी हैं तो देवताओं के ईष्ट हैं। वे देवी अन्नपूर्णा से भिक्षायाचन करते हैं तो स्वयं महादानी भी हैं। उनका चरित्र अद्भुत गुणों का मिश्रण है। यह अमिट अनुभव मेरे लिए बहुत प्रेरणास्पद रहा।

ओम नमः शिवाय।



गौरव नंदा
सहायक

सिफती का घर - अमृतसर

दो महीने पहले मेरा परिवार के साथ अमृतसर जाना हुआ। कोविड काल के बाद मेरी अपने बेटे के साथ पहली यात्रा थी तो वह इसके लिए बहुत उत्साहित था। सुबह राजपुरा रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़ने के बाद शाम को करीब 5 बजे हम अमृतसर अपने होटल में पहुँच गए जो श्री हरमंदिर साहब के बिलकुल पास था। कुछ देर आराम करने के बाद हमने रात्रि को ही श्री हरमंदिर साहब गुरुद्वारे जाकर मत्था टेकने का फैसला लिया। स्वर्ण मंदिर के नाम से विख्यात यह गुरुद्वारा सिख धर्म के पांचवें गुरु, श्री गुरु अर्जन देव जी ने इस गुरुद्वारे को स्थापित किया। सिख धर्म के सर्वोच्च



धार्मिक स्थल के रूप में स्वर्ण मंदिर पूरी दुनिया में सुविख्यात है। गुरुद्वारे की संरचना अत्यंत सुन्दर है। संगमरमर तथा सोने से बना गुरुद्वारा बहुत ही अद्भुत कला का प्रतीक है। यहाँ का वातावरण अत्यंत ही साफ़ सुथरा है। सिख धर्म के अनुयायी बड़े मन से यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा करते हैं। यहाँ के गुरु के लंगर में रोज़ हज़ारों लोग प्रसाद रूप में भोजन ग्रहण करते हैं। सभी धर्मों के लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। इस गुरुद्वारे का लम्बा इतिहास है। अंदर की ओर पवित्र जल के तालाब के बीचों बीच गुरुद्वारा साहिब है व चारों तरफ बड़ा सा प्रांगण है।

गुरुद्वारे में एक अजायब घर (museum) भी है जहाँ सिख धर्म से जुड़ी चीज़ें रखी गयी हैं। बाहर की तरफ खाने-पीने की व धार्मिक वस्तुओं, तस्वीरों, किताबों की दुकानें सजी रहती हैं। मत्था टेकने के बाद लंगर ग्रहण करके कुछ देर सेवा करने के बाद हम अपने होटल वापस आ गए। अगले दिन सुबह हम दुर्गीयाना मंदिर जो कि लक्ष्मी नारायण मंदिर, दुर्गा तीर्थ तथा शीतला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है की तरफ चल पड़े। यह मंदिर भी संगमरमर व सोने से बना है, यह बस अड्डे से 1.5 कि.

मी. की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 16वीं सदी में किया गया। इसका पुनर्निर्माण व वर्तमान स्वरूप सन् 1921 में करवाया गया था। यहाँ दशहरा व रामनवमी के त्यौहार बड़ी ही धूमधाम से मनाए जाते हैं। दुर्गीयाना मंदिर में मत्था टेकने के बाद हम गोबिंदगढ़ किले की तरफ चल पड़े। गोबिंदगढ़ किला एक ऐतिहासिक सैन्य किला है जो कि अमृतसर शहर के बीच में स्थित है। हरमंदिर साहिब व अमृतसर शहर की बाहरी व भीतरी हमलों से सुरक्षा के लिए भंगी रियासत के प्रमुख गुज्जर सिंह ने इस किले की नींव 18वीं शताब्दी में रखी थी।

तब वह सिख जत्थों के लिए बनाया गया

छोटा-सा किला था, जिसे बाद में राजा रणजीत ने नए सिरे से बनवाया और सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के नाम पर इसका नामकरण किया। पंजाब पर अंग्रेजों का राज हो जाने पर 1849 में यह किला भी उनके पास चला गया और फिर आजादी के बाद भारतीय सेना के कब्जे में रहा।



छावनी

क्षेत्र में होने के कारण आम जनता की नजर में यह कभी आया ही नहीं। यही कारण है कि आज भी अमृतसर के अधिकतर लोगों को शहर में इस किले के होने की जानकारी नहीं है। हैरियेज के प्रति

कुछ जागरुक लोगों के लगातार दबाव बनाए जाने के बाद 2009 में सेना ने किला केंद्र सरकार को सौंप दिया। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इसकी चाबी पंजाब सरकार को दे दी। इस किले को देखने की टिकट 290 रुपये थी जिसमें पूरा किला घूम सकते हैं और इसमें 2 शो दिखाये जाते हैं, जिनमें पहले में इस किले की सारी जानकारी दिखायी जाती है कि ये कब बना, कैसे बना, किसने बनवाया और दूसरा दिल्ली वाले अक्षरधाम की तरह लेजर लाइट शो जिसमें दिखाया जाता है कि कैसे जनरल



डायर ने जलियांवाला बाग में बेकसूर लोगों पर गोलियां चलवाई थी। यह सब देखने में ऐसा लगता है जैसे यह हत्याकांड अपनी आँखों के सामने हुआ हो। इसके अलावा इसमें पंजाब का लोकनृत्य भी दिखाया जाता है। इसके अन्दर एक मार्केट भी है। गोबिंदगढ़ फोर्ट घूमने के बाद हम पार्टिशन म्यूजियम पहुँचे जिसकी टिकट 10 रुपये की है।

पंजाब के इस ऐतिहासिक शहर में स्वर्ण मंदिर और जलियांवाला बाग से कुछ ही दूरी पर स्थित 'पार्टिशन म्यूजियम' की विभिन्न दीर्घाओं में देश के बँटवारे से जुड़े घटनाक्रम को बयान करने की कोशिश की गई है। अखबारों की बहुत सी कतरने और तस्वीरें उस वक्त की कैफियत बताती हैं। अखंड भारत का एक नक्शा बँटवारे से पहले के स्वरूप का गवाह है। म्यूजियम की दीवारों पर लगी तस्वीरों में कहीं अपने घरबार छोड़कर पैदल और बैलगाड़ी पर आते लोगों के रेले हैं तो कहीं पहले से लदी रेलगाड़ी पर सवार होने की मशक्कत करते लोगों की भीड़। कोई बूढ़ी मां को कंधे पर बिठाए महफूज जगह की तलाश में निकल पड़ा है तो

कहीं कोई मां भीड़ में अपने बिछड़े बच्चों को ढूँढ रही है। कुछ तस्वीरें अपना सब कुछ गंवा चुके लोगों की बेबसी बयां करती हैं।

तमाम तस्वीरों में मंजर भले जुदा है, लेकिन बँटवारे का दर्द और अपनों को खोने की बेबसी लगभग एक ही जैसी है। देश को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली, लेकिन उसके बाद लाखों लोगों को एक अनदेखी सीमा ने दो हिस्सों में बांट दिया। लाखों लोगों के लिए उनका अपना देश पराया हो गया। पंजाब और बंगाल में रातोंरात लोग अपने ही देश में परदेसी हो गए और फिर शुरू हुआ इतिहास का सबसे बड़ा पलायन। यह म्यूजियम उन्हीं अभागों की दास्तां बयां करता है। अमृतसर के टाउन हॉल की गेरूआ इमारत में आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज ट्रस्ट द्वारा बनाए गए इस म्यूजियम को 'पार्टिशन म्यूजियम' का नाम दिया गया है। इमारत की हर दीवार जैसे बँटवारे के दर्द से बोझिल है। संग्रहालय की सीईओ मल्लिका अहलुवालिया ने कहा, "बँटवारे पर यह अपनी तरह का पहला म्यूजियम है। दुनिया में कहीं ऐसा कोई और संग्रहालय नहीं है।" 'पार्टिशन म्यूजियम' घूमते-घूमते हमें शाम हो गई तथा उसके बाद हम जलियांवाला बाग पहुँचे। वहाँ पर अब भी उस कुएं और दीवारों पर जनरल डायर की गोलियों के निशान



हैं, जिसने उसे 13 अप्रैल 1919 को निहत्थे भारतीय आन्दोलनकारियों पर चलवाया था। काफी शाम हो चुकी थी तथा काफी थकावट भी हो गई थी। उसके बाद हम अपने होटल वापिस आ गए। अगले दिन ट्रेन पकड़कर हम वापिस अपने घर चले आए। मेरे और मेरे बेटे के लिए यह पहली यात्रा बहुत यादगार रहेगी।



अनन्या

सुपुत्री श्री पंकज वोहरा
उप निदेशक

हरिद्वार यात्रा का वर्णन

छुट्टियों में हम सब घूमने जाते हैं। हम हर बार नाना—नानी के घर पर जाते हैं। लेकिन इस बार हम हरिद्वार की तीर्थ यात्रा पर गए थे। यह यात्रा हमने ट्रेन से की। हमने वहां पर खूब मस्ती की। मेरे परिवार में पापा—मम्मी, दादा—दादी और बड़ी दीदी हैं।

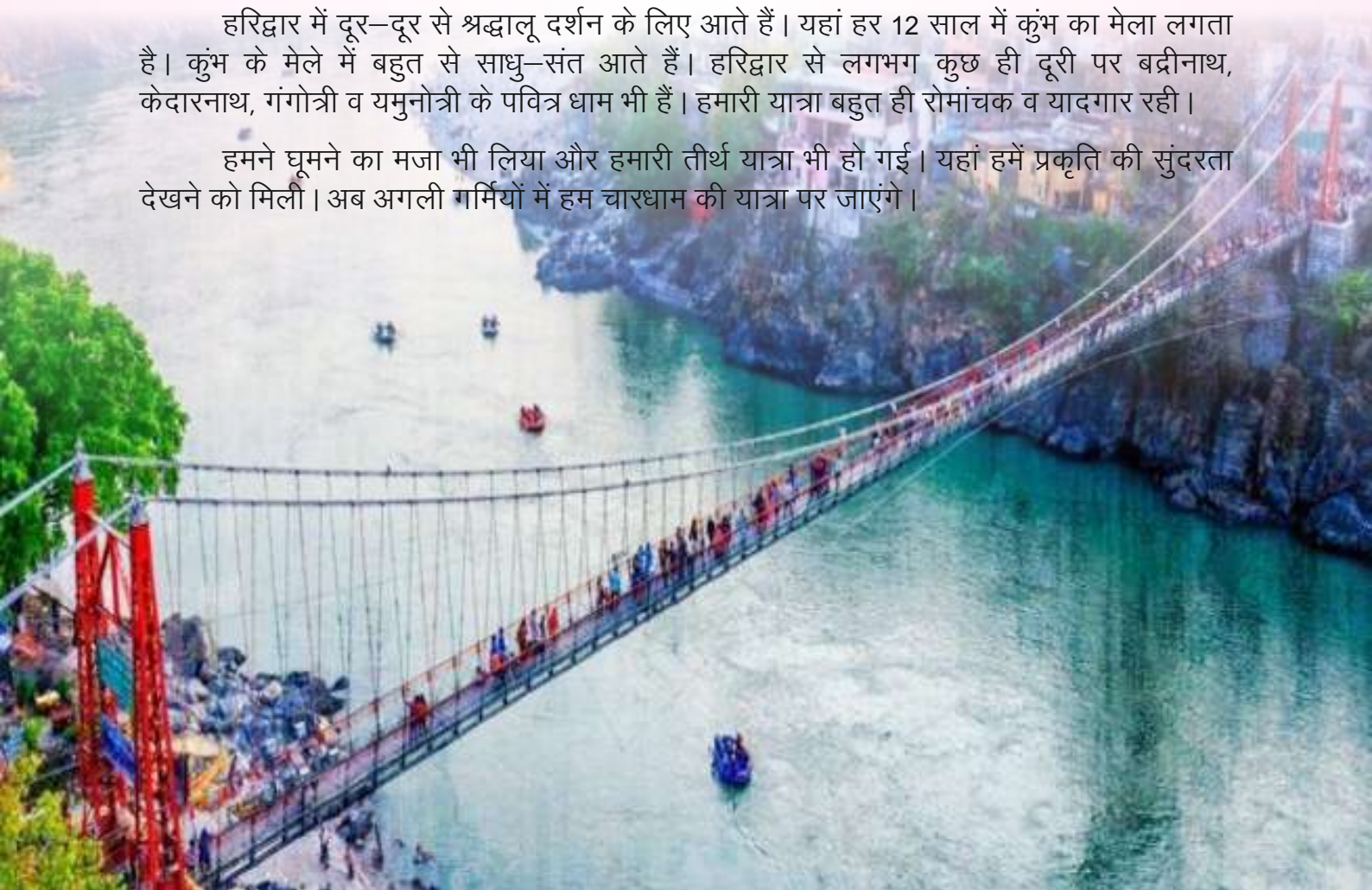
हरिद्वार में हमारे गुरुजी का आश्रम है। हरिद्वार में हम सबने गंगा जी में स्नान कर आरती का आनन्द लिया। हरिद्वार बहुत ही सुंदर तीर्थस्थल है। सबसे पहले हम गुरुजी के आश्रम गए। फिर हम मंदिरों में दर्शन के लिए गए। वहां हर की पौड़ी के सामने मनसा देवी का मंदिर है, दूसरी तरफ पहाड़ी पर चंडी देवी का मंदिर है। हरिद्वार में बहुत सुंदर मंदिर हैं।

दर्शनों के बाद हम हरिद्वार से कुछ ही दूरी पर ऋषिकेश गए। वहां राम व लक्ष्मण झूला नामक पुल है। इस पुल से गंगा नदी का दर्शन बड़ा मनोरम प्रतीत होता है। यहां से खूब बड़े—बड़े पहाड़ दिखते हैं।

हरिद्वार में पवित्र गंगा नदी पर हमने मस्ती की। मुझे वहां नई—नई जानकारी मिली।

हरिद्वार में दूर—दूर से श्रद्धालू दर्शन के लिए आते हैं। यहां हर 12 साल में कुंभ का मेला लगता है। कुंभ के मेले में बहुत से साधु—संत आते हैं। हरिद्वार से लगभग कुछ ही दूरी पर बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री के पवित्र धाम भी हैं। हमारी यात्रा बहुत ही रोमांचक व यादगार रही।

हमने घूमने का मजा भी लिया और हमारी तीर्थ यात्रा भी हो गई। यहां हमें प्रकृति की सुंदरता देखने को मिली। अब अगली गर्मियों में हम चारधाम की यात्रा पर जाएंगे।



कविता परिचय

आज फिर किसी को रोते देखा कविता फूट पड़ी
आज फिर किसी को हँसते देखा कविता फूट पड़ी
आज फिर मौसम बदला - मैं कुछ गुनगुना उठा
आज एक बच्चे को मुस्काते देखा - मैं कुछ गा उठा

जीवन में सुख-दुःख, हँसना-रोना, उत्सव-पर्व,
त्यौहार, प्रकृति सब जगह एक कविता है।
एक कवि हृदय चाहिए जो इसे देख सके,
समझ सके और कह सके, रच सके, गा सके।
जीवन के इस गीत में, प्रेम भरी प्रीति में,
बसंत की सुगन्ध में, होली की उमंग में
हमारे निगम के कर्मियों ने भी कविता की कल्पना को साकार किया है।
आइए देखें कुछ कवि हृदयों को.....

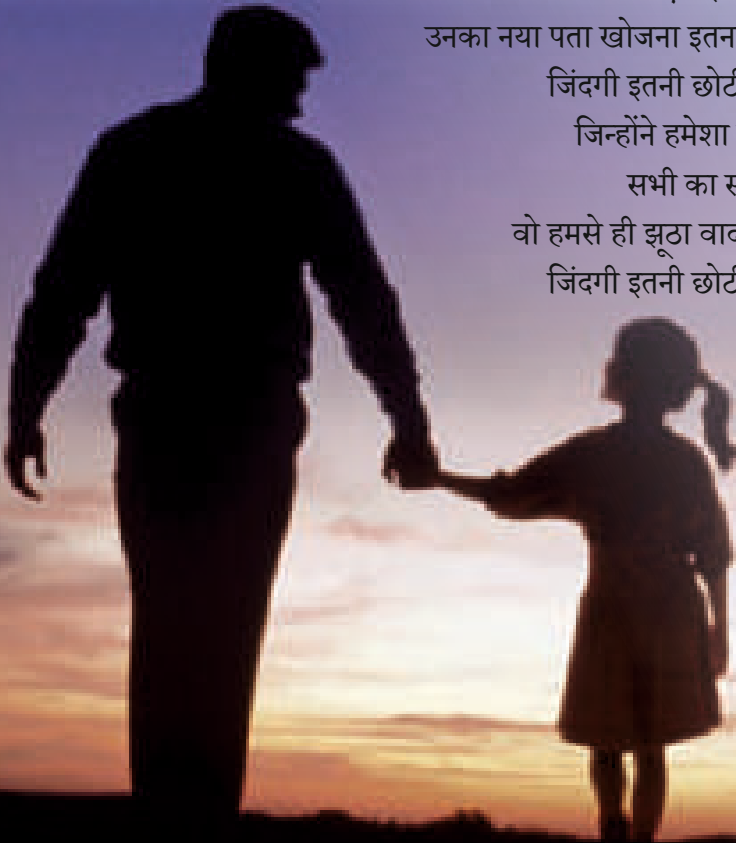




तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ अनुवाद
अधिकारी

मेरे पिता को समर्पित

जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।
कुछ दिन हँसाकर रोता हुआ छोड़ देती है, ये कभी पता न था ।
जो हमारी जिंदगी होते हैं, उन्हें ही हमसे दूर कर देती है, ये कभी पता न था ।
जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।
जिनका एक दिन भी हमसे बिना बात किए नहीं गुजरता था,
वो ऐसे हमें छोड़ जाएंगे, ये कभी पता न था ।
जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।
जिनकी नजरें सिर्फ हमारे आने की राह ताकती थी।
बेटा कैसे हो, हमेशा यही पूछती थी,
वो इस तरह हमें बिना देखे ही चले जाएंगे, ये कभी पता न था ।
जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।
आज भी जब कभी उनकी कोई बात याद आती है,
बस उनकी एक झलक पाने को बेताब हो जाती हूँ,
उनका नया पता खोजना इतना मुश्किल हो जाएगा, ये कभी पता न था ।
जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।
जिन्होंने हमेशा सच्चाई का रास्ता दिखाया,
सभी का सम्मान करना सिखाया,
वो हमसे ही झूठा वादा कर जाएंगे, ये कभी पता न था ।
जिंदगी इतनी छोटी होती है, ये कभी पता न था ।





खुशी



अनीश सूद
सहायक

ऐ "सुख" तू कहाँ मिलता है
क्या तेरा कोई पक्का पता है

उम्र अब ढलान पे है
हौसला अब थकान पे है

क्यों बन बैठा है अन्जाना
आखिर क्या है तेरा ठिकाना

हाँ उसकी तस्वीर है मेरे पास
अब भी बची हुई है आस

कहाँ-कहाँ ढूँढा तुझको
पर तू न कहीं मिला मुझको

मैं भी हार नहीं मानूंगा
सुख के रहस्य को जानूंगा

ढूँढा ऊँचे मकानों में
'बड़ी-बड़ी दुकानों में

बचपन में मिला करता था
मेरे साथ रहा करता था

स्वादिष्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में

पर जबसे मैं बड़ा हो गया
मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया

वो भी तुझको ही ढूँढ रहे थे
बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे

मैं फिर भी नहीं हुआ हताश
जारी रखी उसकी तलाश

क्या आपको कुछ पता है
ये सुख आखिर कहाँ रहता है?

एक दिन जब आवाज ये आई
क्या मुझको ढूँढ रहा है भाई

मेरे पास तो "दुःख" का पता था
जो सुबह शाम अकसर मिलता था

मैं तेरे अन्दर छुपा हुआ हूँ
तेरे ही घर में बसा हुआ हूँ

परेशान हो के शिकायत लिखवाई
पर ये कोशिश भी काम न आई

मेरा नहीं है कुछ भी "मोल"
सिक्कों में मुझको न तोल

मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ
पत्नी के साथ चाय पीने में
"परिवार" के संग जीने में

माँ बाप के आशीर्वाद में
रसोई घर के पकवानों में

बच्चों की सफलता में हूँ
माँ की निश्छल ममता में हूँ

हर पल तेरे संग रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ

मैं तो हूँ बस एक "अहसास"
बंद कर दे तू मेरी तलाश

जो मिला उसी में कर "संतोष"
आज को जी ले कल की न सोच

कल के लिए आज को न खोना
मेरे लिए कभी दुखी न होना





हर्ष जिंदल
सहायक

तुम्हारे लिए ठहरा

कब तक दूर रहेंगे भला,
एक ही कश्ती में सवार दो किनारे हैं हम।
एक दूजे के साथ मुकम्मल,
एक दूजे के बिन बेसहारे हैं हम।
ज़रा करीब तो आकर देखो कभी,
शायद छू जाए तुम्हें एहसास कोई गहरा।
अगर तुम एक हसीन मंज़िल हो,
तो मैं भी एक सफर हूँ सुनहरा।
माना के तुम्हारी तरह मुकम्मल नहीं,
पर शायद तुम्हारे लिए ही था ठहरा।

छोटे-मोटे झरनों जैसे शोर मचाता नहीं,
एक गहरा और शांत दरिया हूँ मैं।
माना के तुम हर किसी के हाथ नहीं,
पर तुम तक पहुँचने का ज़रिया हूँ मैं।
जो तुम्हारी भी कमियों को पहचानता है,
ऐसा एक अनोखा नज़रिया हूँ मैं।
तुम गुम ना जाओ कहीं,
तुम्हारा साया बनकर तभी देता हूँ पहरा।

अगर तुम एक हसीन मंज़िल हो,
तो मैं भी एक सफर हूँ सुनहरा।
माना के तुम्हारी तरह मुकम्मल नहीं,
पर शायद तुम्हारे लिए ही था ठहरा।

पार करने को समुन्दर ज़िन्दगी का,
तेरा मुझ में बहना ज़रूरी था।
क्या पता तुम्हें पूरा करने के लिए,
मेरा अधूरा रहना ज़रूरी था।
खुद में तुम मुझे थोड़ा बचा के रखना,
तुमसे ये भी कहना ज़रूरी था।
सब कुछ मिट जाए चाहे ज़ेहन से मेरे,
याद रहता है फिर भी तेरा चेहरा।
अगर तुम एक हसीन मंज़िल हो,
तो मैं भी एक सफर हूँ सुनहरा।
माना के तुम्हारी तरह मुकम्मल नहीं,
पर शायद तुम्हारे लिए ही था ठहरा।





चल राही



विवेक कौशल
प्रवर श्रेणी
लिपिक

चल राही, चल राही, चल तू चल...
चढ़ राही, चढ़ राही, डगर कोई चढ़...

मुश्किलें तोड़ दे, पीछे छोड़ दे
मचा दे अंधेरी दुनिया में हलचल...

सर नीचे, आँखें मीचे,
अफसोस ना कर...
मिलेगी मंज़िल, आगे तो बढ़...
हाँ! ना मान हार, हो जा निसार
ना जाने कैसा होगा, अगला ये पल...

चल राही, चल राही, चल तू चल...
चढ़ राही, चढ़ राही, डगर कोई चढ़...

ना रुक, ना थम,
ना रुक, ना थम,
बहती नदी को कर दे मध्यम...
ना कर, तू परवाह,
तय कर अपनी राह
और पा कर मंज़िल, तू मचल...

चल राही, चल राही, चल तू चल...
चढ़ राही, चढ़ राही, डगर कोई चढ़...

तू चले, साथ चलें,
तू चले, साथ चलें,
तेरी जो मुश्किलें..

चल राही, चल राही, चल तू चल...
चढ़ राही, चढ़ राही, डगर कोई चढ़...

जिन्दगी

अच्छी सोच अच्छे विचार और अच्छी भावना मन को हल्का करती है,
हँसते रहिए हँसाते रहिए, सदा मुस्कराते रहिए, मुस्कुराओ क्या गम है
जिन्दगी में टेंशन किसको कम है, अच्छा या बुरा तो केवल भ्रम है।

जिन्दगी का नाम ही कभी खुशी कभी गम है
जिस इन्सान के कर्म अच्छे होते हैं
इसके जीवन में कभी अन्धेरा नहीं होता
कोई मेरा बुरा करे वो कर्म उसका
मैं किसी का बुरा ना करुं यह धर्म मेरा

दो ही चीज ऐसी हैं, जिसे देने से
किसी का कुछ कम नहीं होता
एक मुस्कुराहट दूसरी दुआ,
हमेशा बांटते रहिए हमेशा बढ़ती रहेगी

कभी झगड़ा कभी मस्ती
कभी आंसू कभी हँसी
छोटा—सा पल छोटी—सी खुशी
एक प्यार की कश्ती और ढेर सारी मस्ती
इसी का नाम तो है 'जिन्दगी'



जगदीश चन्द
सूर्यवंशी
सहायक



चुनाव का दौर



संदीप पाँचाल
अवर श्रेणी लिपिक

परेशानियां कुछ कल लग रही है, बिजली पानी पुरजोर आ रहा है।
इज्जत भी थोड़ी सी मिलने लगी है, लगता है चुनाव का दौर आ रहा है।

1. देखो गरी के घर में आटा है,
कुछ दुःख तकलीफों में घाटा है।
कल किस ने राशन दिया था, आज कोई और आ रहा है,
लगता है चुनाव का दौर आ रहा है।
2. गली-कूचे सब चमक रहे हैं,
सफाई के कारण दमक रहे हैं।
पहले लगा था सफाई-कमी कोई और आ रहा है,
पर ये तो चुनाव का दौर आ रहा है।
3. दलित-पिछड़े की बात चल रही है,
नया सवेरा होगा, अभी रात चल रही है।
वादों की भरमार है, सबकी बराबरी पर जोर आ रहा है,
लगता है चुनाव का दौर आ रहा है।
4. सरकारी कर्मचारी कुछ खुश लग रहे हैं,
सोए हुए अरमान, फिर से जग रहे हैं।
सुनो जरा ध्यान से, पुरानी पेंशन पर शोर आ रहा है,
लगता है चुनाव का दौर आ रहा है।





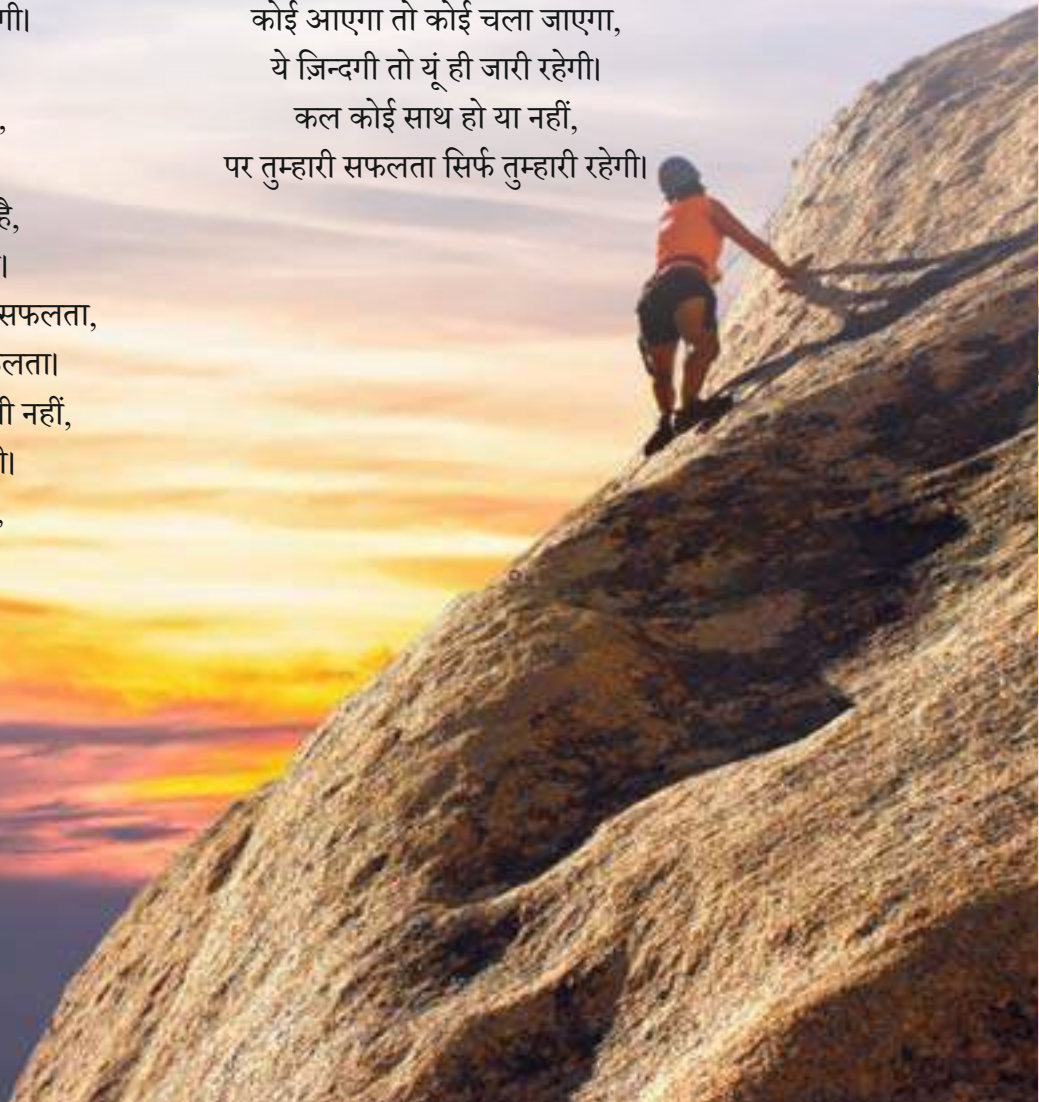
हर्ष जिन्दल
सहायक

तुम्हारी सफलता

जो आज तुम्हारा दोस्त है,
क्या पता कल किसी और का हो जाए
चलो माना के वफ़ा का वो पक्का हो,
पर ज़िन्दगी के बोझ में कहीं खो जाए
जो आज तुम्हें सबसे प्यारा हो,
क्या पता कल वो प्यार भी प्यार ना रहे।
आज हर कोई साथ चलता हो,
कल एक भी तरफ़दार ना रहे।
कोई आएगा तो कोई चला जाएगा,
ये ज़िन्दगी तो यूँ ही जारी रहेगी।
कल कोई साथ हो या नहीं,
पर तुम्हारी सफलता सिर्फ़ तुम्हारी रहेगी।

तू ज़ोर तो पूरा लगा तरफ से अपनी,
क्या भला हिम्मत हारने से होगा।
सूरज तो रोज़ ही उगता और ढलता है,
पर तेरा सवेरा तेरे ही जागने से होगा।
कभी चख कर तो देख कितनी लाज़वाब है सफलता,
तुझ पर उठे हर सवाल का जवाब है सफलता।
ना हो मायूस जो नाकामयाबी साथ छोड़ती नहीं,
तेरी एक जीत हर हार पर भारी पड़ेगी।
कोई आएगा तो कोई चला जाएगा,
ये ज़िन्दगी तो यूँ ही जारी रहेगी।
कल कोई साथ हो या नहीं,

पर तुम्हारी सफलता सिर्फ़ तुम्हारी रहेगी।
जो-जो तुम पर ऊँगली उठाते गए,
उन सबकी गाल पर तमाचा पड़ेगा वो।
कल जितनी बार भी गिरोगे तुम,
तब-तब तुम्हारा सहारा बनेगा वो।
आज जिसके लिए जाग रहा है तू,
वो मिलने तुझसे खिली-खिली सुबह ले के आएगी।
लोगों के तानों से खामोश हो गयी थी जो,
वापिस तेरी वो मस्त मॉली ज़ुबां ले के आएगी।
तुम अधूरा सा इशारा कोई दे जाना,
वो तुम्हारी बची हुई बात सारी कहेगी।
कोई आएगा तो कोई चला जाएगा,
ये ज़िन्दगी तो यूँ ही जारी रहेगी।
कल कोई साथ हो या नहीं,
पर तुम्हारी सफलता सिर्फ़ तुम्हारी रहेगी।





साक्षी शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

हँसते-हँसते

“हर किसी की तमन्ना होती है कि जिंदगी हँसते-हँसते बीत जाए।
इसलिए मैं आपकी हंसी के लिए कुछ ऐसे चुटकुले खोजकर लाई हूँ।
आइए फिर शुरू करते हैं ये मजेदार चुटकुलों का सफर..”

- पापा (गुस्से में) - एक काम नहीं होता तुमसे, तुमको हरा धनिया लाने को बोला था तो तुम पुदीना ले आए हो, तुमको धनिया और पुदीना में फर्क पता नहीं चलता? तुम जैसे बेवकूफ को घर में रखने से अच्छा है कि तुम घर से निकल जाओ।
बच्चा - पापा जी, साथ ही चलते हैं घर से
पापा - क्यों, ऐसा क्या हो गया ??
बच्चा - क्योंकि..... मम्मी कह रही हैं कि ये मेथी है।
- डॉक्टर - रात में टेंशन लेकर नहीं सोना चाहिए।
मरीज - तो क्या पत्नी को मायके भेज दें।
- बंदा स्कूटर पर, स्कूटर 80 पर
बंदा बुलेट पर, बुलेट 100 पर
बंदा ऑल्टो पर, ऑल्टो 110 पर
बंदा जीप पर, जीप 120 पर
बाद में?.....
बाद में क्या??
बंदा एम्बुलेंस पर, एम्बुलेंस 130 पर
पर बंदा रहेगा स्पीड में ही!!
- एक दर्जी बस में चढ़ा। तभी उसके पास फोन आ गया।
दर्जी फोन पर बोला - तू बाजू काटकर रखा मैं आकर गला काटता हूँ।
बस फिर क्या था पूरी बस खाली...
- एक हवाई जहाज तूफान में फँस गया....
पायलट (यात्रियों से) बोला- किसी को बचने की दुआ आती है क्या?
एक बाबा खुश होकर बोले- हाँ, मुझे आती है।
पायलट - ठीक है बाबा, आप दुआ कीजिए, एक पैराशूट कम है...!
बाबा बेहोश...
- पति - पत्नी में जोरदार झगड़ा हुआ। पत्नी अपना घर छोड़कर मायके चली गई। पत्नी इतने गुस्से में थी कि पति को रास्ते से ही मैसेज किया। मैसेज में लिखा कि अपने फोन से मेरा नम्बर भी डिलीट कर देना।
पति ने रिप्लाई किया, "आप कौन हैं बहन जी।"
- पत्नी- तुम प्यार करते हो मुझे?
पति- हाँ, बिलकुल शाहजहां की तरह।
पत्नी- मतलब मेरे मरने के बाद ताजमहल बनवाओगे?
पति- मैं प्लॉट ले चुका हूँ पगली, देर तो तू ही कर रही है।
- टीचर- बिजली कहाँ से आती है?
पप्पू- सर, मामाजी के यहाँ से।
टीचर- वो कैसे?
पप्पू- जब भी बिजली जाती है, पापा कहते हैं, "सालों ने फिर बिजली काट दी...."

चुटकले

अब वो दिन दूर नहीं जब पति—पत्नी के बीच डिजिटल लड़ाई कुछ इस तरह होगी
बीवी— ना जाने कौन—सी घड़ी में मैंने तुम्हारी 'फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट' की थी।
पति— पत्थर पड़ गये थे मेरी अक्ल पे जो तुम्हारी 'डीपी' को 'नाइस पिक' कहा था।
बीवी— मेरी अक्ल पे भी परदा पड़ा था जो तुम्हारी 'डीपी' पर 'हैंडसम' का 'कमेंट' किया था।
पति— अच्छा होता तुम्हें उसी वक्त 'अनफ्रेंड' कर देता...
बीवी— मैंने भी उसी वक्त तुम्हें 'ब्लॉक' किया होता तो आज ये दिन ना देखना पड़ता।



अनीश सूद
सहायक

विचार अमृत

विचार जीवन दर्शन का सारामृत होते हैं जो इस संसार के समस्त चराचर का मूल भी हैं। विचार ही किसी कृति का आधार बनते हैं, विचार ही मनुष्य मात्र के जीवन को दिशा देने का आधार होते हैं, महा मनीषियों के विचारामृत ही समाज के पथ प्रदर्शक होते हैं, जिन्हें आत्मसात कर एक साधारण से साधारण आदमी भी अपने जीवन को धन्य बना लेता है। वास्तव में विचार ही वह शक्ति है जो सर्वप्रथम मस्तिष्क में आते हैं और तत्पश्चात् वे विचार किसी वस्तु, रचना या कृति आदि के रूप में साकार रूप ले लेते हैं।

क.रा.बी. निगम के हमारे कर्मियों ने भी अपनी लेखनी से विचार उकेरे हैं ..
आइए देखें, किस सीपी से कैसा मोती निकलता है....





(गौरव नन्दा)
सहायक

सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच एक शक्ति, एक शस्त्र है, जो भगवान ने हमें दिया है, इसका प्रयोग कर हम बड़े से बड़े युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में हमें कई तरह की परेशानियाँ आती हैं, ऐसा कोई नहीं है, जिसके जीवन में कोई कठिनाई, परेशानी न हो। हर इन्सान के पास परेशानी है, लेकिन हर इन्सान परेशान, रोता हुआ तो नहीं दिखता। परेशानी के समय भी जो अपनी सोच पर काबू रखते हैं, वह ही उससे लड़कर आगे सफल हो पाते हैं। मनुष्य के मन में दो तरह के विचार होते हैं:— **सकारात्मक और नकारात्मक।**

सकारात्मक विचार भगवान की ओर से आते हैं, जबकि नकारात्मक सोच शैतान का काम है। आप मानें या न मानें लेकिन इस दुनिया में जैसे भगवान हैं, वैसे ही शैतानी ताकत भी हैं। मन में गलत विचार लाना, अपने ही बारे में बुरी सोच ये शैतानी शक्ति ही देती है, ऐसा कौन इन्सान है जो अपने व अपने लोगों के लिए बुरा करना या सोचना चाहेगा। लेकिन शैतान ऐसा ही है, वो चाहता है, मनुष्य की सोच उसके हिसाब से चले, इसलिए वो हर वो बात जो हमारी भलाई के लिए नहीं है, हमारे मन में डालेगा।

सकारात्मक सोच कैसे बनाएं

कहते हैं सकारात्मक सोच वाले लोग ही जीवन में सफल हो पाते हैं। आपके मन के विचार आपके स्वाभाव के द्वारा सबके सामने आते हैं। सकारात्मक सोच वालों के आस-पास सभी लोग रहना पसंद करते हैं। सकारात्मक सोच के लिए सुबह उठते ही आईने के सामने खड़े होकर ये प्रक्रिया अपनाएं:—

1. मुस्कुराओ
2. आज मेरा दिन है
3. मुझे पता है, मैं विजेता हूँ
4. मैं अपने लिए खुद जिम्मेदार हूँ
5. अपना लक्ष्य मैं खुद चुन सकता हूँ
6. मुझे पता है, ये मैं कर सकता हूँ और मैं पक्के से कर सकता हूँ
7. भगवान हमेशा मेरे साथ हैं

आप सोच रहे हैं, ऐसा करने से क्या बदलाव आएगा, मेरी परेशानी ऐसे ठीक नहीं होगी। लेकिन आप विश्वास करें और इस प्रक्रिया को अपनाएं। कहते हैं शब्दों में बहुत ताकत होती है, अगर आप पॉजिटिव बोलोगे तो वैसा ही होगा, क्योंकि पॉजिटिव किरणें हमारे आस-पास आएँगी। जितना हो सके, अपनी परिस्थिति पर पॉजिटिव बोलें।

किसी को भी अपने अंदर सकारात्मक सोच लाने के लिए किसी भी काम के प्रति एक जुनून होना चाहिए, दीवानगी होनी चाहिए। अपने आप पर यकीन होना चाहिए कि वह जो भी कार्य अपने जीवन में करेगा उसको पूरा करके रहेगा, उसमें सफलता हासिल करेगा। अपने आप पर विश्वास करके किसी भी लक्ष्य को जोश और जुनून के साथ हासिल करने के बारे में सोचना चाहिए। कैरियर में आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक सोच के साथ ही कार्य करना जरूरी होता है। जिसके अंदर अहंकार होता है, वह कभी भी अपने कार्य में सफल नहीं हो पाते हैं।

इसलिए अपने आप में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान को बनाए रखने के लिए सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना आवश्यक होता है। अपने अंदर किसी भी कार्य को करने के लिए उत्साह पैदा करना चाहिए। उत्साहित होकर किसी भी कार्य को करते हुए आगे बढ़ना चाहिए तभी अपने आप में सकारात्मक सोच पैदा हो सकती है।

सकारात्मक सोच के लाभ

- यह आपको लक्ष्य हासिल करने और सफलता पाने में मदद करती है
- सकारात्मक सोच जीवन में आपको खुशनुमा बना के रखती है।
- यह आपको अधिक ऊर्जावान बनाती है।
- आप खुद को और दूसरों को प्रेरित करने में सक्षम हो जाते हैं।
- आप अपने दैनिक जीवन में कम बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करेंगे।
- आपको लोगों से अधिक सम्मान और प्यार मिलता है।

पंछी कभी अपने बच्चों के भविष्य के लिए घोंसले बनाकर नहीं देते,
वे तो उन्हें उड़ने की कला सिखाते हैं।



आत्मा



कुसुम लता
अधीक्षक

आत्मा अजर-अमर है और निश्चय शुद्ध भी, किंतु जब तक आत्मा सांसारिक कामों में उलझी रहती है तब तक अपनी विशुद्ध दशा को प्राप्त नहीं कर पाती है। इसी कारण इसे संसार में 84 लाख योनियों में भटकना पड़ता है। हर आत्मा अपने पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार इस संसार में जन्म लेती है।

इसी क्रम में आता है एक मनुष्य जीवन। जन्म से लेकर मृत्यु तक का जीवन एक पुस्तक की तरह होता है, जिसका पहला पेज सूचक होता है मनुष्य के जन्म का और अंतिम पृष्ठ कहलाता है मनुष्य की मृत्यु। पहले और अंतिम पेज के बीच के पन्नों को इस जीवनकाल में हमें ही भरना होता है। अच्छे या बुरे कार्यों द्वारा। कई बार किसी पुस्तक को पढ़ने में इतना आनंद आता है कि उसको बीच में छोड़ने का मन ही नहीं करता। ठीक ऐसे ही मनुष्य को भी अपने जीवनकाल में ऐसे कार्य करने चाहिए कि लोग स्वतः ही उसकी ओर खिंचे चले आएँ। उसकी मौजूदगी ही भरी सभा में एक आकर्षण बन जाए। यह तभी संभव होता है जब मनुष्य का मन सच्चा, निर्मल, निश्छल, दानवीर, अहिंसावादी, मर्यादा, करुणा, मानवता का पालन करने वाला हो। जिस मनुष्य का जीवन ऐसा होगा उसके जीवन की पुस्तक का पहला और अंतिम पृष्ठ तो क्या सभी पन्ने पठनीय होंगे। इसके विपरीत कार्य करने वाले व्यक्ति के जीवन की पुस्तक का पहला पृष्ठ तो क्या कोई पेज पढ़ने का मन नहीं करेगा।

चूँकि जन्म से लेकर मृत्यु तक के किए गए कार्यों के आधार पर ही हर आत्मा का पुनः जन्म होता है, इसीलिए जीवन के हर दिन हमें कोई न कोई कार्य करना चाहिए। हमें चिंतन-मनन कर अपनी आत्मा का भी परीक्षण करते रहना चाहिए। इस तरह हम जान पाएंगे कि हममें क्रोध, लोभ, मोह, परिग्रह और राग-द्वेष आदि दोषों का स्तर क्या है? ध्यान, अभ्यास से इन्हें दूर कर हमें अपनी आत्मा को शुद्ध करना चाहिए। एक शुद्ध या पवित्र आत्मा को ही एक दिन जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है।





अश्वनी कुमार
वरिष्ठ अनुवाद
अधिकारी

मिलावट का कहर

अधमा: धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमा: ।

उत्तमा: मानमिच्छन्ति मानो हि महताम् ॥

अर्थात् निम्न कोटि के लोगों को सिर्फ धन की इच्छा होती है। ऐसे लोगों को सम्मान से मतलब नहीं होता। एक मध्यम कोटि का व्यक्ति धन और सम्मान दोनों की इच्छा रखता है। वहीं एक उच्च कोटि के मनुष्य के लिए सम्मान ही सबसे बड़ा धन होता है। ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान धन से कहीं अधिक बड़ा होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो धन अर्जन ही आज हमारा मुख्य लक्ष्य बन गया है। सम्मान को तो आज धन के तराजू में ही तौला जाता है। लेकिन दौलत की इस होड़ में मनुष्य स्वयं का ही दुश्मन बन बैठा है। प्रकृति से दूर होता जा रहा है। अपनों से दूर होता जा रहा है। प्रगति और विकास के नाम पर प्राकृतिक वस्तुओं से छेड़खानी कर उनके मूल स्वरूप को ही विकृत कर रहा है। मनुष्य ने न तो नदियों का जल / भू-जल ही शुद्ध छोड़ा है और अधिक पैदावार के नाम पर न ही खाद्यान्न (अन्न, फल व सब्जियाँ) को शुद्ध छोड़ा है। धन अर्जन के चक्कर में खाद्यान्नों (अन्न, फल व सब्जियों) पर रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग विशेषकर फल व सब्जियों को टीके लगा कर रातों-रात तैयार कर लिया जाता है। ऐसा रसायन जो एक लौकी को रातभर में दो फुट तक बढ़ा सकता है, वही रसायन जब मानव शरीर में जाएगा तो स्वाभाविक है कि आंतों पर इसका कहर तो बरसेगा ही और इसके परिणाम भयंकर बीमारियों के रूप में आ ही रहे हैं। मिलावट और रसायनों के प्रयोग ने आज लगभग हर चीज के स्वाद व हमारे स्वास्थ्य को बिगाड़ कर रख दिया है। आज किसी 55-60 वर्ष के आदमी से पूछेंगे तो शायद वह यही कहेगा कि संतरे में वो दूर तक फैलने वाली खुशबू नहीं, अमरूद में अब वो लाली और मिठास नहीं, करेले और खीरे में वो कड़वाहट नहीं और दूध व घी की तो पूछिए ही मत। न तो दूध में वो महक है, और न ही घी में वो गुण। महाकवि रहीम जी अगर आज होते तो वो अपना माथा पीटते कि उन्होंने केवल एक श्लोक ही गलत क्यों लिख डाला:-

खीरा सिर ते काटिए, मलियत नमक लगाए।

रहिमन करुये मुखन को, चहियत इहें सजाया।

सच कहें तो रहिमन जी ही क्यूं सब माथा पीट रहे हैं कि खीरे और करेले के औषधीय गुण तो उनकी कड़वाहट में ही थे, आखिर वो गए कहाँ। क्या विकास इसी को कहते हैं कि वस्तुओं के प्राकृतिक स्वरूपों और प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं को ही अपने स्वार्थ के लिए विकृत कर दें। सतयुग से लेकर लगभग पिछले 80 वर्षों तक सब कुछ लगभग सामान्य सा ही चल रहा था। मिलावट और रसायनों के प्रयोग ने खाद्य पदार्थों के प्राकृतिक गुणों को बर्बाद करके रख दिया है। नकली घी, नकली दूध, नकली मसाले, नकली मावे से बनी मिठाइयाँ यहाँ तक की नकली दवाइयाँ-सब कुछ नकली हो चुका है आज। कल-कारखानों के कचरे व विषैली गैसों ने वातावरण विषैला बना दिया है। आज हर इंसान किसी न किसी बीमारी का शिकार होकर रह गया है। धरती को तो रहने लायक छोड़ा नहीं अब यह विकास पुरुष बारूद के ढेर पर सवार होकर चाँद को सजाने चला है।

तकनीक और विज्ञान का प्रयोग मानव हित में हो तो अच्छा होगा। उदाहरण के लिए हमारा ध्यान पेयजल के अभाव वाले क्षेत्रों में शुद्ध जल उपलब्ध करवाने पर होना चाहिए, न कि मंगल ग्रह पर जाकर जल की खोज करने पर। इसी प्रकार परमाणु वारहेड युक्त मिसाइल की मारक क्षमता में वृद्धि कर मानव सभ्यताओं का विनाश करने के बजाय प्राकृतिक / जैविक खादों का प्रयोग कर किस प्रकार अधिक से अधिक फसलों व फलों का उत्पादन हो, इस पर ध्यान एवं शोध की आवश्यकता है। आज समय की मांग है कि हम प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करें और प्रकृति की शरण में जाएं ताकि हम इस धरा को स्वर्ग से भी सुंदर बना सकें तथा रोगमुक्त जीवन जी सकें वरना तो वह दिन दूर नहीं जब अणु, परमाणु और मिलावट के इस खेल में धरा का यह मानव स्वयं ही धराशायी हो जाएगा।

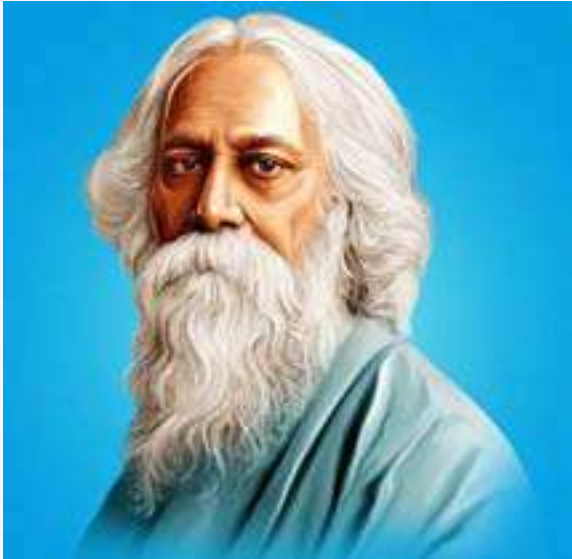


राजेश शर्मा
उप निदेशक
(राजभाषा)

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

जन गण मन अधिनायक जय हे राष्ट्रगान की ये पंक्तियाँ सुनते ही हर भारतवासी का देश प्रेम हिलोरें मारने लगता है। राष्ट्रगान देश की अस्मिता का प्रतीक होता है। अतः किसी कवि की रचना को राष्ट्रगान के रूप में चुना जाना, निश्चित ही उसके लिए सर्वोच्च सम्मान है। भारत में यह सम्मान पाने वाले महान कवि थे-श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर। यह बात बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है कि वे शायद विश्व के अकेले रचनाकार हैं जिनकी दो रचनाओं को अलग-अलग देशों ने राष्ट्रगान के तौर पर अपनाया। 'जन गण मन' के अतिरिक्त उनकी रचना 'आमार शोनार बांग्ला' बांग्लादेश का राष्ट्रगान है। यही नहीं श्रीलंका के राष्ट्रगान 'श्री लंका माथा' के रचनाकार 'आनंद समकूरन' भी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के ही शिष्य थे। महान् प्रतिभा के धनी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयन्ती के अवसर पर उनकी सभी रचनाओं को 'रवीन्द्र रचनावली' के नाम से प्रकाशित किया गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को तत्कालीन बंगाल तथा आज के पश्चिम बंगाल के 'कोलकता' में हुआ। उनके पिता



का नाम 'श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर' तथा माता का नाम 'श्रीमति शारदा देवी' था। वे तेरह भाई बहनों में सबसे छोटे थे। उनका लगभग पूरा परिवार ही कला एवं साहित्य से जुड़ा था। उनके पिता को यात्राएँ करने का बहुत शौक था। इसी शौक के कारण उन्हें भी बचपन से ही यह शौक लग गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में 5 महाद्वीपों के 30 से ज्यादा देशों की यात्रा की तथा विश्व के अनेक महान लोगों से मुलाकात की, जिनमें आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक तथा मुसोलिनी जैसे राष्ट्राध्यक्ष भी थे। इन्हीं अनुभवों ने उनके लेखन को विस्तार तथा गहराई दी। उनके बड़े भाई जितेन्द्रनाथ कवि थे, ज्योतिन्द्रनाथ को संगीत एवं नाटक का शौक था। उनकी बहन स्वर्णकुमारी लेखिका थी। इस प्रकार पूर्णतः साहित्यिक पृष्ठभूमि में जन्म लेने तथा पालन-पोषण होने से उनकी प्रतिभा को पल्लवित होने के विशेष अवसर मिले।

रवीन्द्रनाथ टैगोर मूलतः कवि थे। 'रवीन्द्र बचपन से ही रचनाधर्मी' थे। उन्होंने पहली कविता 8 वर्ष की उम्र में लिखी तथा मात्र 16 वर्ष की आयु में उनकी पहली लघुकथा प्रकाशित हुई। बचपन से ही कविता, द्वन्द्व और भाषा में उनकी अद्भुत प्रतिभा का आभास मिलने लगा था। उन्होंने लगभग 2230 गीतों की रचना की। ये गीत मुख्यतः हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ठुमरी शैली से प्रभावित थे। ये गीत मानवीय भावनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने संगीत रचना की एक नई शैली का विकास किया, जिसे 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से जाना जाता है। रवीन्द्र संगीत आज भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के 50 चर्चित गीतों का चीन की मंदारिन (चीनी) भाषा में अनुवाद किया गया है जिसमें 'जन गण मन' भी सम्मिलित है।

टैगोर के सृजन संसार गीतांजली, पूरबी प्रवाहिनी, शिशु भोलानाथ, महुआ, वनवाणी, परिशेष, चोखेर बाली, कणिकर नैवेद्य आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। साहित्य की शायद ही कोई विधा हो, जिसमें उनकी रचना न हो। उन्होंने कवित गान, कथा, उपन्यास, नाटक, प्रबंध आदि अधिकतम विधाओं में रचना की। गीतांजली, गीताली, गीतिमाल्य, कथा कहानी ने उन्हें विश्व भर में पहचान दी। उनके द्वारा अपनी ही पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवाद के बाद संपूर्ण विश्व ने उनकी प्रतिभा का लोहा माना। उन्हें 1913 में 'गीतांजली' के लिए 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। वे पहले गैर-यूरोपीय व्यक्ति थे जिन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया।

परन्तु उनकी विलक्षण प्रतिभा केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं थी। वे कला के क्षेत्र में भी उतने ही सक्रिय एवं सफल रहे,

जितने अन्य क्षेत्रों में वे महान कलाकार भी थे। उनकी बनाई हुई कलाकृतियाँ (पेंटिंग), विश्व भर में सराही गई एवं विश्व के अनेक देशों में इनकी प्रदर्शनी लगाई गई। इनकी कलाकृतियों में अध्यात्म एवं मानव के अंतर्मन की गहराई के दर्शन होते थे। इसके साथ-साथ वे महान शिक्षाविद् एवं समाज सुधारक भी थे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नई पहल करते हुए 'शांतिनिकेतन' में 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' की स्थापना की। यह एक प्रायोगिक शिक्षण संस्थान था जहाँ शिष्यों को प्रकृति के समीप रहकर शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिलता था। वास्तव में वे शिक्षा के प्रचलित एवं परंपरागत तरीके से असहमत थे। इसीलिए उन्होंने प्रकृति के सान्निध्य में पेड़ों, बगीचों और एक पुस्तकालय के साथ इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने नोबेल पुरस्कार की संपूर्ण राशि और पुस्तकों की रायल्टी से प्राप्त सारी राशि इस विश्वविद्यालय की स्थापना में लगा दी।

महात्मा गांधी भी रवीन्द्रनाथ टैगोर का बहुत सम्मान करते थे। महात्मा गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि गुरुदेव ने ही दी थी। जब शांति निकेतन आर्थिक तंगी से गुजर रहा था, तब गांधी जी ने गुरुदेव को साठ हजार रुपये का चेक प्रदान कर सहयोग दिया था।

1921 में टैगोर ने ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण के लिए संस्थान की स्थापना की। 1930 में उन्होंने जातिवाद एवं अस्पृश्यता के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने दलित नायकों को केन्द्र में रखकर कविताएँ एवं नाटक लिखे। उन्होंने गुरुवयूर मंदिर को दलितों के लिए खोलने के सफल आंदोलन का संचालन किया।



गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को सन् 1915 में अंग्रेज सरकार द्वारा 'नाइट' की उपाधि प्रदान की गई, जिसे उन्होंने जलियाँवाला बाग नरसंहार के विरोध में लौटा दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके दो गीत 'चिट्ठी जेठा भयशून्यो' (कहाँ मन डर के बिना) तथा 'एकला चलो रे!' (अकेले चलो) बहुत प्रचलित हुए, जिन्होंने अनेक भारतीयों को प्रेरित किया।

'कलम के धनी' इस महान नायक के व्यक्तित्व का व्याख्यान करने में कलम भी असहाय प्रतीत होती है। आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व 'गुरुदेव' को नमन करता है।

कलियुग के सत्य

1. विश्वविख्यात विश्वविद्यालय— मानवीय समाज
2. शैक्षणिक स्तर— आर्थिक संपन्नता एवं निरन्तर अध्यात्मिक ज्ञान की प्रवाहमयी धारा
3. मानवीय समाज के शत्रु— काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, यही युगो-युगांतरों से समाज के विध्वंस का कारण बनते आ रहे हैं।
4. मानवीय समाज के मित्र— सकारात्मक प्रवृत्ति, प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर शोध की प्रक्रिया।
5. उदार का मार्ग— यथासम्भव श्रीमद् भागवत गीता का अनुसरण।



विश्वगुरु

विश्वगुरु भारत को प्रणाम,
तुम्हीं से मिला, विश्व को भाषा का ज्ञान—विज्ञान।
गणित सबको सिखाया,
सम्पूर्ण विश्व को दिया योग ज्ञान।
योग से पायी सुंदर स्वास्थ्य काया,
विश्व गुरु, भारत को प्रणाम।
सबको दिया निडरता व संयम का ज्ञान,
तभी विश्वगुरु बना महान।
शान इसकी बनी करके शुभ काम,
विश्वगुरु को प्रणाम।



सुशील सचदेवा
उप निदेशक
(वित्त)

यू पी आई ट्रांजैक्शन - डिजिटल लेन-देन की रीढ़

अक्टूबर 2022 में, एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस (यूपीआई) के माध्यम से आर्थिक लेन-देन की संख्या 7.3 ट्रिलियन तक पहुंच गई, जो एक रिकॉर्ड है। यह पिछले अक्टूबर से लगभग तीन-चौथाई की वृद्धि है।

यूपीआई ने भारत की भुगतान अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण को सक्षम बनाने में एक लंबा सफर तय किया है। इसने लोगों के पैसे से लेन-देन करने के तरीके में सुविधा की परतें जोड़ दी हैं। यूपीआई एक स्वदेशी 'मेड इन इंडिया' उत्पाद होने के कारण भारत को डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में विश्व में अपना विशिष्ट स्थान खोजने में मदद मिली है। 2026 तक 180 अरब डॉलर का बाजार होने की संभावना है, भारत इस क्षेत्र में शीर्ष देशों में शामिल है। यूपीआई का देश की सीमाओं से परे विस्तार, निश्चित रूप से राष्ट्र के लिए बहुत गर्व की बात है। एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस (यूपीआई) यह एक ऐसी प्रणाली है जो लाभार्थी के बैंक खाते के विवरण की आवश्यकता के बिना, एक मोबाइल प्लेटफॉर्म पर दो बैंक खातों के बीच तत्काल धन हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करती है। यह कैशलेस भुगतानों को तेज, आसान और सुगम बनाने के लिए चौबीसों घंटे तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस) का एक उन्नत संस्करण है। यह भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा विकसित और आरबीआई द्वारा विनियमित है। एनपीसीआई ने 2016 में 21 सदस्य बैंकों के साथ यूपीआई लॉन्च किया। भारत कई विदेशी देशों में यूपीआई आधारित बुनियादी ढांचे का विस्तार कर रहा है जैसे कि सिंगापुर के Pay Now को यूपीआई से जोड़ा गया है।

यूपीआई लेन-देन की कुल संख्या में शानदार वृद्धि इंगित करती है कि भारत में आर्थिक लेनदेन करने की सुविधा में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। किसी को नकद ले जाने की आवश्यकता नहीं है या, उस मामले के लिए, बटुए में अब छोटा सा बदलावा। इसके अलावा, यूपीआई के माध्यम से भुगतान किए जाने वाले व्यापारियों को लूट होने का कम जोखिम होता है, यह देखते हुए कि पैसे का भुगतान डिजिटल रूप से किया जा रहा है। कुछ विश्लेषकों ने यूपीआई डेटा का उपयोग यह निष्कर्ष निकालने के लिए किया है कि लेनदेन में वृद्धि दर्शाती है कि अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में काफी बेहतर कर रही है।

यूपीआई का उपयोग बहुत छोटे-छोटे लेन-देन करने के लिए किया जाता है। जैसा कि नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने इस साल की शुरुआत में बताया था: "भुगतान प्रणालियों पर विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि भारत में खुदरा लेनदेन (नकद सहित) की कुल मात्रा का लगभग 75% ₹ 100 लेनदेन मूल्य से कम है। "इसके अलावा, कुल यूपीआई लेन-देन के 50% का लेनदेन मूल्य ₹200 तक है।" अनिवार्य रूप से, लोग यूपीआई का उपयोग रोजमर्रा के छोटे-छोटे लेन-देन करने के लिए करते हैं, जैसे सड़क किनारे विक्रेताओं से सब्जियां और फल खरीदना। यूपीआई लेनदेन में वृद्धि की तुलना किसी भी चीज से नहीं की जा सकती है। पहले इनमें से कई लेन-देन नकद में हो रहे थे, और यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि कितने नकद लेन-देन हो रहे थे।

अधिक यूपीआई लेन-देन हो रहे हैं इसका मतलब है कि हो रहे छोटे नकद लेनदेन की संख्या संभवतः यूपीआई लेन-देन के समान गति से गिर गई है या नहीं बढ़ी है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अक्टूबर 2021 में औसत यूपीआई लेनदेन की कीमत ₹1,829 थी। तब से यह 9% से अधिक गिरकर ₹1,658 हो गया है। इसका मतलब है कि यूपीआई लेन-देन का आकार अब पहले की तुलना में छोटा है। इसलिए, छोटे आर्थिक लेनदेन जो नकद में हुआ करते थे, संभवतः यूपीआई के माध्यम से हो रहे हैं। लेकिन यह देखते हुए कि प्रचलन में मुद्रा सकल घरेलू उत्पाद के 13% के करीब है, भारतीय अर्थव्यवस्था के आकार के अनुपात के रूप में प्रणाली में कुल नकदी में कमी नहीं आई है। इसका मतलब यह है कि बड़े लेनदेन (रियल एस्टेट, थोक से खुदरा वितरण आदि) अभी भी नकद में हो रहे हैं।

यूपीआई लेनदेन की बढ़ती संख्या ने भारत में किसी भी छोटे आर्थिक लेन-देन को पहले से कहीं ज्यादा आसान बना दिया है। साथ ही, यूपीआई के माध्यम से छोटे आर्थिक लेन-देन करने वाले कई व्यापारियों के लिए आय का मार्ग विकसित हो रहा है। यह तब फायदेमंद साबित हो सकता है जब वे आयकर का भुगतान शुरू करने के लिए पर्याप्त पैसा कमाते हैं।



सुनील कुमार

प्रवर श्रेणी
लिपिक

चैट जीपीटी एक नए युग की दस्तक

परिचय

हाल के वर्षों में, हमने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के विकास में एक महत्वपूर्ण वृद्धि देखी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ने मशीनों को उन कार्यों को करने में सक्षम बनाया है जो पहले केवल मनुष्यों के लिए विशिष्ट थे। ओपन एआई द्वारा बनाई गई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मॉडल चैट जीपीटी, एक ग्राउंड-ब्रेकिंग तकनीक है जो मनुष्यों के साथ संवाद करने के लिए प्राकृतिक भाषा का उपयोग करती है। यह टेक्स्ट इनपुट से प्रतिक्रियाओं को समझने के उपरान्त प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे मशीनों के साथ संवाद करना संभव हो जाता है जोकि लगभग उतना ही स्वाभाविक है जितना कि किसी इंसान से बात करना। चैट जीपीटी, इसके उपयोग, लाभ, सीमाएं और भविष्य की क्षमता के बारे में कुछ रोचक जानकारी निम्न प्रकार है:-

चैट जीपीटी क्या है?

चैट जीपीटी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में सबसे प्रमुख कंपनियों में से एक ओपन एआई द्वारा बनाया गया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मॉडल है। इसका विस्तृत अर्थ "चैट जेनरेटिव प्री-ट्रेनड ट्रांसफार्मर" है। इस मॉडल को मनुष्य जैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए बड़े पैमाने पर टेक्स्ट डेटा पर पूर्व-प्रशिक्षित और डिज़ाइन किया गया है। चैट जीपीटी ट्रांसफार्मर-आधारित तंत्रिका (न्यूरल) नेटवर्क मॉडल का उदाहरण है जो प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करने के लिए ध्यान तंत्र (अटेंशन मैकेनिज्म) और गहन शिक्षा (डीप लर्निंग) संयोजन का उपयोग करता है। मॉडल को टेक्स्ट डेटा की विविध श्रेणी पर पूर्व-प्रशिक्षित किया गया है, जो इसे विभिन्न भाषाओं में, विभिन्न विषयों पर प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है।

चैट जीपीटी के उपयोग क्षेत्र: चैट जीपीटी के विभिन्न उद्योगों में अनेकों उपयोग हैं। इसके कुछ महत्वपूर्ण उपयोग निम्न प्रकार हैं:-

1. **उन्नत ग्राहक सेवा:** चैट जीपीटी का उपयोग बुद्धिमान चैटबॉट (इंटेलीजेंट चैटबॉट) बनाने के लिए किया जा सकता है जो ग्राहकों के प्रश्नों को संभाल सकता है, सहायता प्रदान कर सकता है और समस्याओं को हल कर सकता है। यह व्यवसायों को तेज़, सटीक और वैयक्तिकृत प्रतिक्रियाएं प्रदान करके उनकी ग्राहक सेवा को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।
2. **समय और लागत की बचत:** चैट जीपीटी व्यवसायों में उन कार्यों को स्वचालित करने में मदद कर सकता है जहाँ मानवीय हस्तक्षेप अनिवार्य होता है, जैसे कि ग्राहक सेवा और अनुसूची बनाना। यह कंपनियों की दक्षता में सुधार करते हुए समय और पैसा बचाने में मदद कर सकता है।

3. **बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव:** चैट जीपीटी मशीनों के साथ बातचीत करते समय उपयोगकर्ताओं को अधिक प्राकृतिक और सहज अनुभव प्रदान कर सकता है। इससे उपयोगकर्ताओं और मशीनों के बीच जुड़ाव और संतुष्टि बढ़ सकती है।
4. **वैयक्तिकरण:** चैट जीपीटी का उपयोग उपयोगकर्ताओं के लिए वैयक्तिकृत अनुभव बनाने के लिए किया जा सकता है, जैसे वैयक्तिकृत शिक्षा या स्वास्थ्य संबंधी सलाह। इससे बेहतर परिणाम और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।
5. **सुलभता:** चैट जीपीटी अक्षम या भाषा बाधाओं वाले लोगों को प्राकृतिक भाषा इंटरफ़ेस प्रदान करके प्रौद्योगिकी को अधिक सुलभ बना सकता है।
6. **दक्षता वृद्धि:** चैट जीपीटी बड़ी मात्रा में डेटा को जल्दी और सटीक रूप से संसाधित (प्रोसेस) कर सकता है, जिससे विश्लेषण और सामग्री निर्माण (कंटेंट क्रिएशन) जैसे कार्यों को शीघ्रता से पूरा किया जा सकता है।
7. **बहुभाषी समर्थन:** चैट जीपीटी को टेक्स्ट डेटा से विविध स्तर पर पूर्व-प्रशिक्षित किया जा सकता है, जिससे यह विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न विषयों पर प्रतिक्रियाएं उत्पन्न कर सकता है।
8. **वास्तविक समय इंटरैक्शन:** चैट जीपीटी उपयोगकर्ताओं को वास्तविक समय (रियल टाइम) की प्रतिक्रियाएं प्रदान कर सकता है, जिससे यह लाइव चैट और ग्राहक सहायता जैसे कार्यों के लिए उपयोगी है।
9. **बेहतर निर्णय लेना:** चैट जीपीटी बड़ी मात्रा में डेटा के विश्लेषण के आधार पर व्यवसायों को अंतर्दृष्टि (इनसाइट) और सिफारिशें प्रदान कर सकता है।
10. **अनुमापकता (scalability):** चैट जीपीटी को किसी व्यवसाय की जरूरतों के आधार पर आसानी से घटाया या बढ़ाया जा सकता है, जिससे यह एक लचीला और लागत प्रभावी साधन बन जाता है।

चैट जीपीटी की सीमाएँ

इसके संभावित लाभों के बावजूद, चैट जीपीटी की कुछ सीमाएँ (limits) भी हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता है। सबसे महत्वपूर्ण सीमाएँ निम्न प्रकार हैं:

1. **पूर्वाग्रह:** चैट जीपीटी को केवल डेटा के आधार पर प्रशिक्षित किया जाता है। यदि डेटा पक्षपाती है, तो यह पक्षपाती प्रतिक्रियाओं को जन्म दे सकता है, भेदभाव और नकारात्मक रूढ़ियों को बनाए रख सकता है।
2. **समझ की कमी:** चैट जीपीटी उन प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करता है जो तकनीकी रूप से तो सही हैं लेकिन एक मनुष्य की



तुलना में उनमें प्रासंगिक समझ और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी रहती है। परिणामस्वरूप उत्पन्न प्रतिक्रियाएं अनुचित या असंवेदनशील हो सकती हैं।

- सीमित रचनात्मकता:** चैट जीपीटी अपने प्रशिक्षण डेटा से सीखे गए पैटर्न के आधार पर प्रतिक्रियाएं उत्पन्न कर सकता है, लेकिन इसमें रचनात्मकता और नए विचारों को उत्पन्न करने की क्षमता की कमी हो सकती है।
- डेटा पर अति निर्भरता:** चैट जीपीटी को कार्य करने के लिए बहुत सारे डेटा की आवश्यकता होती है, और यदि डेटा सीमित या पक्षपाती है, तो यह गलत या अपूर्ण प्रतिक्रियाओं को जन्म दे सकता है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी:** चैट जीपीटी मानव भावनाओं को समझने और जवाब देने में सक्षम नहीं हो सकता है, जिससे सहानुभूति और समझ की कमी हो सकती है।
- पारदर्शिता की कमी:** चैट जीपीटी "ब्लैक बॉक्स" के रूप में संचालित होता है, जिसका अर्थ है कि यह हमेशा स्पष्ट नहीं करता है कि इसकी प्रतिक्रियाएं कैसे उत्पन्न होती हैं, जिससे अविश्वास और गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं।
- जटिल कार्यों के साथ कठिनाई:** चैट जीपीटी उन जटिल कार्यों के साथ संघर्ष कर सकता है जिन्हें संदर्भ और बारीकियों की गहरी समझ की आवश्यकता होती है, जैसे कि कानूनी या चिकित्सा सलाह।
- भाषा पर निर्भरता:** चैट जीपीटी को प्राकृतिक भाषा के उपयोग द्वारा संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो उन अनुप्रयोगों में इसकी उपयोगिता को सीमित कर सकता है जिनके लिए इनपुट या आउटपुट के अन्य रूपों की आवश्यकता होती है।
- वायरस हमलों के लिए भेद्यता:** चैट जीपीटी वायरस के प्रतिकूल हमलों के प्रति संवेदनशील है, जिससे गलत या हानिकारक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए मॉडल के साथ छेड़छाड़ हो सकती है।
- ऊर्जा की खपत:** चैट जीपीटी को महत्वपूर्ण कंप्यूटिंग शक्ति की आवश्यकता होती है, जिससे ज्यादा ऊर्जा की खपत और कार्बन उत्सर्जन हो सकता है।

अपनी सीमाओं के बावजूद, चैट जीपीटी की क्षमता विशाल है। यह भविष्य में विकास और शोधन के साथ, कई उद्योगों में गेम-चेंजर बन सकता है। कुछ ऐसे क्षेत्र जहां चैट जीपीटी से भविष्य में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं:

- हेल्थकेयर:** चैट जीपीटी का उपयोग बुद्धिमान आभासी सहायकों (वर्चुअल असिस्टेंट) को बनाने के लिए किया जा सकता है जो स्व-निदान, रोगी - परीक्षण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य सिफारिशों वाले रोगियों की मदद कर सकते हैं। इसका उपयोग स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और रोगियों के बीच संचार में सुधार करने के लिए भी किया जा सकता है।

- शिक्षा:** चैट जीपीटी का उपयोग छात्रों के लिए व्यक्तिगत सीखने (पर्सनलाइज्ड लर्निंग) के अनुभव बनाने के लिए किया जा सकता है, जो उन्हें अनुकूलित प्रतिक्रिया (कस्टमाइज्ड फीडबैक) और समर्थन प्रदान करता है। इसका उपयोग विकलांग लोगों या भाषा बाधाओं वाले लोगों तक शिक्षा की पहुंच में सुधार करने के लिए भी किया जा सकता है।
- व्यवसाय:** चैट जीपीटी का उपयोग ग्राहक सेवा को स्वचालित करने, व्यक्तिगत बिक्री सिफारिशें प्रदान करने और व्यावसायिक प्रक्रियाओं का अनुकूलन करने के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग सोशल मीडिया और अन्य मार्केटिंग चैनलों के लिए सामग्री उत्पन्न करने के लिए भी किया जा सकता है।
- पत्रकारिता:** चैट जीपीटी का उपयोग स्वचालित रूप से समाचार लेख और सारांश उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है, जिससे पत्रकारों को अधिक गहन रिपोर्टिंग पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिल सकता है।
- कानूनी:** चैट जीपीटी का उपयोग कानूनी दस्तावेजों और अनुबंधों को उत्पन्न करने, कानूनी अनुसंधान में सहायता करने, व्यक्तियों और व्यवसायों को कानूनी सलाह प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।
- वित्त:** चैट जीपीटी का उपयोग व्यक्तिगत वित्तीय सलाह प्रदान करने, वित्तीय रिपोर्ट उत्पन्न करने, धोखाधड़ी का पता लगाने और रोकथाम के साथ सहायता प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।
- ग्राहक सेवा:** चैट जीपीटी का उपयोग चैटबॉट के माध्यम से ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है जिससे मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता कम होगी और प्रतिक्रिया समय कम लगेगा।
- मनोरंजन:** चैट जीपीटी का उपयोग ऑनलाइन खेल के लिए संवादात्मक कहानी वर्णन (स्टोरी टेलिंग) अनुभव और आभासी सहायकों (वर्चुअल असिस्टेंट) को बनाने के लिए किया जा सकता है।
- सोशल मीडिया:** चैट जीपीटी का उपयोग सोशल मीडिया डेटा का विश्लेषण करने और उपयोगकर्ताओं के लिए व्यक्तिगत सिफारिशें उत्पन्न करने के साथ-साथ सोशल मीडिया प्रबंधन को स्वचालित करने के लिए किया जा सकता है।
- अनुवाद:** चैट जीपीटी का उपयोग मशीन अनुवाद में सुधार करने और विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोगों के बीच संचार को सक्षम करने के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष: अंत में, चैट जीपीटी एआई प्रौद्योगिकी के विकास में एक नए युग का प्रतिनिधित्व करता है। यह दक्षता और निजीकरण में सुधार करते हुए उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक प्राकृतिक और सहज अनुभव प्रदान करके कई उद्योगों में क्रांति लाने की क्षमता रखता है। हालांकि, इसकी सीमाओं और नैतिक चिंताओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसका उपयोग जिम्मेदारी और नैतिक रूप से किया जाए। इसमें आगे अनुसंधान और विकास की आवश्यकता है। इस सबके बावजूद भी, चैट जीपीटी एआई के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है और भविष्य के लिए अपार क्षमता रखता है।

कहानी

दिखावे की शान पड़ती है खुद पर भारी



वेद प्रकाश
भेषजज्ञ

अरब के एक बादशाह को इत्र का बहुत शौक था। एक दिन वह दरबार में अपनी दाढ़ी में इत्र लगा रहा था। इत्र की एक बूंद नीचे गिर गई। बादशाह ने सबसे नजरें बचाकर उसे उठा लिया। लेकिन उसके वजीर ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया। बादशाह ने भांप लिया कि वजीर ने उसे देख लिया है।

अगले दिन जब दरबार लगा तो बादशाह ने एक बड़े से मर्तबान में इत्र भरवाकर अपने कदमों के पास रख लिया और दरबारियों के साथ बातचीत करने लगा।

थोड़ी देर बाद जब बादशाह को लगा कि सारे दरबारी चर्चा में व्यस्त हैं तो उसने इत्र से भरे मर्तबान को ठोकर मारकर ऐसे दुलका दिया मानो वह अपने आप गिर गया हो। बादशाह ऐसे दिखावा करने लगा जैसे उसे इत्र के बह जाने की कोई परवाह न हो।

वजीर ने यह देखा तो उससे रहा नहीं गया और बोला— जहांपना गुस्ताखी माफ हो लेकिन मुझे मालूम है कि यह सब आप इसलिए कर रहे हैं क्योंकि कल मैंने आपको जमीन से इत्र उठाकर दाढ़ी में लगाते हुए देख लिया था लेकिन हुजूर! यकीन मानिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आप मेरे लिए कल भी बादशाह थे और आज भी बादशाह हैं बस कल आपने एक सहज इंसान होने के नाते उसको / इत्र को बर्बाद नहीं होने दिया था लेकिन आज आपके अंदर बादशाह होने का घमंड यह बर्बादी करा रहा है।

अकसर हमारे आस-पास ऐसे कई लोग होते हैं या कई बार हम खुद भी ऐसी हरकत करने लगते हैं। लेकिन कुछ भी ऐसा करने से पहले हमें यह सोचना चाहिए कि दिखावा किसी और पर नहीं खुद पर ही भारी पड़ता है।





माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा कार्यालय के सफल निरीक्षण की स्मृतियाँ



खेल के मैदान से





माननीय श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री रामेश्वर तेली जी
के क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ एवं पंजाब दौरे की झलकियाँ





विशेष सेवा पखवाड़ा-2023





गणतंत्र दिवस समारोह-2023





सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ







राजभाषा

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ द्वारा आयोजित प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में 29 सितंबर 2022 को प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में कार्यालय के सभी अधिकारियों / अधीक्षकों व अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/ डीसीबीओ के प्रबंधकों / प्रभारियों को प्रतिभागिता हेतु आमंत्रित किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय क्षेत्रीय निदेशक श्री अमरीश कुमार शर्मा द्वारा की गई। श्री रमेश लाल वर्मा, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता के रूप में सम्मेलन की गरिमा बढ़ाई।

सम्मेलन का शुभारंभ माननीय अध्यक्ष श्री अमरीश कुमार शर्मा, क्षेत्रीय निदेशक, मुख्य अतिथि श्री रमेश लाल वर्मा, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) तथा क्षेत्रीय कार्यालय के उच्चाधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस दौरान श्रीमती तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, श्रीमती नेहा भारद्वाज, प्रवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती श्वेता जसवाल, अवर श्रेणी लिपिक तथा श्रीमती खुशबू, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा ईश वंदना प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात कार्यक्रम विधिवत प्रारंभ हुआ।



अध्यक्ष महोदय ने मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ व शॉल से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अश्वनी कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी तथा राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। श्री अश्वनी कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने बताया कि यह प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के दिनांक 11 अप्रैल 2022 को किए गए निरीक्षण के दौरान दिए गए आश्वासन के अनुपालन में किया जा रहा है। तत्पश्चात उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) को मंच पर आमंत्रित किया।

श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) ने सर्वप्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में उपस्थित सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा क्षेत्रीय सम्मेलन के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि 11 अप्रैल 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया गया था। माननीय समिति द्वारा हमारे कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को सराहा गया तथा माननीय समिति को दिए गए आश्वासन की अपेक्षा अनुसार हम 'प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन कर रहे हैं। तत्पश्चात उन्होंने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की तथा बताया कि इसमें हम राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों के संबंध में गहन विचार-विमर्श करेंगे और यह तभी संभव है जब हम अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। तत्पश्चात उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपना परिचय देने के लिए आमंत्रित किया। इसके पश्चात श्री रमेश लाल वर्मा, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) को इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया।

श्री रमेश लाल वर्मा, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सम्मेलन में उपस्थित क्षेत्रीय निदेशक महोदय, सभी उच्चाधिकारियों तथा उपस्थित अन्य सदस्यों का अभिवादन किया तथा मुख्य अतिथि के तौर पर सम्मान देने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विषयों पर गहन चिंतन-मनन मंथन किया जाता है। इस प्रकार के मंथन से जो विचार रूपी अमृत हमें मिलता है, निस्संदेह यह हम सबके लिए राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु सकारात्मक सोच पैदा करता है। सम्मेलन हमारे लिए न सिर्फ स्वमूल्यांकन का अवसर प्रदान करता है अपितु अलग-अलग स्तर पर अन्य कार्मिकों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उठाए जा रहे कदमों की जानकारी मिलती है। उन्होंने कहा कि राजभाषा नियम 1976



के नियम 12 के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व कार्यालय प्रमुख को सौंपा गया है। परन्तु उन्होंने स्पष्ट किया कि राजभाषा कार्यान्वयन केवल कार्यालय प्रमुख का दायित्व न होकर कार्यालय के हर अधिकारी / कर्मचारी का दायित्व होता है क्योंकि कार्यालय पद्धति के अनुसार कार्य निचले कौंडर से प्रारंभ होता है और ऊपर तक जाता है। यदि प्रत्येक कार्मिक के स्तर पर कार्य निष्पादन राजभाषा नियमों के अनुरूप होने लगे तो राजभाषा संबंधी नियमों का स्वतः ही अनुपालन हो जाएगा।

राजभाषा विभाग द्वारा भी अलग-अलग अधिकारियों के लिए अलग-अलग स्तर पर जांच बिंदु निर्धारित किए गए हैं जिनका अनुपालन करना हम सबका सामूहिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि राजभाषा में काम करना हम सभी के लिए राष्ट्र सम्मान का विषय है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमें सरकारी काम आमजन की भाषा अर्थात हिन्दी में ही करना चाहिए। आजादी के बाद संविधान निर्माताओं को भी इस बात का आभास हो चुका था कि स्वभाषा के बिना विकास संभव नहीं है। अगर देश को प्रगति के पथ पर लेकर जाना है तो देश की भाषा का सम्मान, संवर्धन व विकास भी जरूरी है। इसी संदर्भ में हमारी सरकार के द्वारा काफी प्रयास भी किए गए। शब्दावली आयोग का गठन किया गया। कोड, मैनुअल, नियम तथा अधिनियमों का हिन्दी अनुवाद तैयार करवाया गया। कार्यालयों में हिन्दी टाइपराइटर्स की व्यवस्था की गई। राजभाषा विभाग का गठन किया गया। हिन्दी आशुलिपि / हिन्दी टंकण / हिन्दी भाषा प्रशिक्षण केंद्र शुरू किए गए और इसके सकारात्मक परिणाम भी हमारे सामने कुछ समय पश्चात आने लगे। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपने अनुभव को साझा किया तथा बताया कि अगर हम स्वप्रेरणा से कार्य करें तो राजभाषा में अर्थात अपनी भाषा में काम करना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। साधारण और सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए तथा हिन्दी को एक संकल्प के रूप में लेकर इसके प्रयोग और विकास के लिए हमें सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में अधीक्षकों व अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/ डीसीबीओ के शाखा प्रबंधकों द्वारा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के द्वारा अपनी-अपनी शाखा / कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन एवं उपलब्धियों की 01 अप्रैल 2021 से 31 मार्च 2022 तक की अवधि की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिनको संज्ञान में लिया गया व यथापेक्षित मार्गदर्शन दिया गया।

विचारणीय मर्दे

सम्मेलन के तीसरे सत्र में अध्यक्ष महोदय की अनुमति से श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) ने क्षेत्रीय कार्यालय की शाखाओं/अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/ डीसीबीओ से प्राप्त विचारणीय मर्दों पर चर्चा आरंभ की :-

1. **मर्द:** ईआरपी माड्यूल्स में ऑनलाइन अवकाश आवेदन में हिन्दी प्रिंट में टिप्पण भाग प्रिंट नहीं होता है। साथ ही कई माँड्यूल्स के नोटिंग भाग में हिन्दी टंकण संभव नहीं है। इसका समाधान किया जाए।

श्री संजीव कुमार, अधीक्षक

कार्रवाई :- राजभाषा अधिकारियों के अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों में भी इस मर्द को उठाया जाता रहा है तथा मुख्यालय स्तर पर सभी माँड्यूल्स हिन्दी समर्थित करने संबंधी कार्रवाई की जा रही है। इस संबंध में मुख्यालय द्वारा कार्रवाई की जानी अपेक्षित है।

2. **मर्द:** राजभाषा शाखा द्वारा हिन्दी में वर्ष के दौरान सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाली शाखा को प्रतिवर्ष राजभाषा चल शील्ड प्रदान की जाती है तथा इस संबंध में सभी शाखाओं से रिपोर्ट मांगी जाती है। शाखा द्वारा हर माह मासिक रिपोर्ट माँगवाई जाती हैं। अतः उन्हीं को आधार मानकर राजभाषा शाखा द्वारा राजभाषा चल शील्ड का निर्णय लिया जाए।

श्री दिनेश सिंह, सहायक निदेशक

कार्रवाई:- मर्द व्यावहारिक नहीं पाई गई क्योंकि मासिक प्रगति रिपोर्ट के प्रारूप व राजभाषा चल शील्ड के प्रारूप में काफी

अंतर है। साथ ही प्रतियोगिता में प्रतिभागिता का निर्णय एवं आंकड़ों की पुष्टि शाखाधिकारी के स्तर पर की जानी अपेक्षित है।

3. **मद:** वर्ष के दौरान सर्वाधिक कार्य हिंदी में निष्पादित करने वाले शाखा कार्यालय / डीसीबीओ को भी राजभाषा चल शील्ड प्रदान करने की व्यवस्था की जाए। साथ ही उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि चल शील्ड के साथ विजेता शाखा/शाखा कार्यालय के लिए नकद पुरस्कार की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

कार्रवाई:- इस संबंध में बाद में विस्तृत चर्चा कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

श्री दिनेश सिंह, सहायक निदेशक

सम्मेलन के चौथे सत्र में श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) तथा श्री सुशील सचदेवा, उप निदेशक-सह नोडल अधिकारी (ई-ऑफिस) द्वारा ई-मेल तथा ई-ऑफिस में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया व तत्संबंधी चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि ई-ऑफिस में हिंदी में कार्य करना काफी आसान है तथा ई-ऑफिस हिंदी समर्थित है। उन्होंने नोडल अधिकारी, (ई-ऑफिस) से अनुरोध किया कि ई ऑफिस के डाटाबेस में यथासंभव मद जैसे पत्राचार के प्रकार के मसौदे का स्वरूप, भाषा कार्मिकों के नाम व पदनाम आदि को हिन्दी में भी



उपलब्ध करवाएं। उन्होंने कहा कि मुख्यालय द्वारा जारी द्विभाषी पत्र शीर्ष को पिक्चर इमेज के रूप में संरक्षित रखें तथा ई-ऑफिस में पिक्चर इमेज को ही अपलोड करें। ई-ऑफिस में पत्र डायराइज करते समय तथा मसौदा अपलोड करते समय ड्रॉपडाउन में अगर पत्र हिंदी में हो तो हिंदी भाषा का विकल्प चुनें तथा पत्र का प्रकार तथा नाम व पदनाम आदि सूचनाएं हिंदी में ही भरें। ई-मेल तथा ई-ऑफिस में प्रयोग हेतु बार-बार प्रयुक्त होने वाली टिप्पणियों को एक 'फाइल' बनाकर अथवा 'क्विक नोट्स' में 'यूजर डीफाइनड' के रूप में सुलभ प्रयोगार्थ रखा जा सकता है। इससे काम करने में सहजता बनेगी तथा समय भी बचेगा। उन्होंने यह भी बताया कि भविष्य में आवधिक रिपोर्टों के लिए आंकड़े ई-ऑफिस से भी प्राप्त किए जा सकेंगे।

अगले सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निम्नलिखित बिन्दुओं को संज्ञान में रखने व तदनुसार कार्यालयी कार्य करने पर बल दिया गया :-

1. प्राप्ति/प्रेषण रजिस्टर व सहायक डायरी में आंकड़ों का समुचित रखरखाव करें व तदनुसार ही आवधिक रिपोर्टों में आंकड़े भरे जाएं हस्ताक्षर करने से पूर्व हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी अपने स्तर पर भी आंकड़ों की पुष्टि कर लें।
2. मासिक प्रगति रिपोर्ट / तिमाही प्रगति रिपोर्ट आगामी माह की 5 तारीख तक राजभाषा शाखा को भेजना सुनिश्चित करें। प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा प्राप्त होने पर अनुपालन रिपोर्ट अवश्य भेजें।
3. संसदीय राजभाषा समिति संबंधी तिमाही रिपोर्ट परिचालित 'अनुबंध क' में आगामी माह की 5 तारीख तक राजभाषा शाखा को अवश्य भेजें।
4. मुख्यालय द्वारा परिचालित प्रारूप के अनुरूप द्विभाषी पत्रशीर्ष का ही प्रयोग करें। पत्रशीर्ष को 'पिक्चर' के रूप में सेव करके प्रयोग किया जा सकता है।
5. सभी मुहरें, नामपट्ट, रिपोर्टों के प्रोफार्मे, मानक मसौदे आदि द्विभाषी रूप में हो।
6. सभी साइनबोर्ड मुख्यालय द्वारा परिचालित प्रारूप में आवश्यकतानुसार त्रिभाषी / द्विभाषी बनवाए जाएं।
7. धारा 3(3) के दस्तावेज अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में एक साथ जारी करें।



8. लिफाफों पर पते हिन्दी में ही लिखें।
9. हिन्दी अथवा अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी में ही दें।
10. मसौदे मूलतः हिन्दी में ही तैयार करें।
11. सभी कार्मिकों द्वारा हस्ताक्षर हिन्दी में ही किए जाएँ।
12. सभी रजिस्ट्रों / फाइल कवरों के शीर्षक अनिवार्यतः नियमानुसार द्विभाषी भाषी लिखे जाएँ व प्रविष्टियाँ हिन्दी में की जाएँ।
13. ई-फाइल, ईमेल व अन्य मॉड्यूल्स पर यथासंभव कार्य हिन्दी में ही किया जाए।
14. विज्ञापनों पर व्यय की जाने वाली राशि का न्यूनतम 50% हिन्दी विज्ञापनों पर व्यय किया जाए व किसी भी भाषा में जारी किए जाने वाले विज्ञापन को अनिवार्यतः हिन्दी में भी जारी किया जाना सुनिश्चित किया जाए।
15. संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर शेष व्यय राशि का न्यूनतम 50% हिन्दी पुस्तकों पर व्यय करना सुनिश्चित करें।
16. शाखा कार्यालय / डीसीबीओ के सभी पात्र लिपिकों / बहुकार्य स्टाफ को हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था संबंधित कार्यालय / डीसीबीओ द्वारा ही की जानी अपेक्षित है। अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
17. टंकण में मंगल फ़ॉन्ट्स का प्रयोग करें। रेमिंगटन कीबोर्ड के माध्यम में कृतिदेव फ़ॉन्ट में टंकण करने वाले कार्मिकों को इंडिक इनपुट 3 सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करें। जिन्हें हिन्दी में टंकण का ज्ञान नहीं है, वे फोनेटिक टंकण (गूगल इंडिक कीबोर्ड, माइक्रोसॉफ्ट इंडिक कीबोर्ड आदि के माध्यम से हिन्दी में टंकण कर सकते हैं। गूगल डॉक्स / गूगल ट्रांस्लेटर के माध्यम से बोलकर टंकण किया जा सकता है।
18. प्रत्येक तिमाही बैठक में सभी शाखा अधिकारी / अधीक्षक, डीसीबीओ प्रभारी / शाखा प्रबन्धक अनिवार्यतः भाग लें।
19. हिन्दी कार्यशालाओं में नामित कार्मिकों को पूरे समय कार्यशाला में प्रतिभागिता करने में सहयोग किया जाए।
20. निगम में प्रचलित राजभाषा संबंधी प्रतियोगिताओं / प्रोत्साहन योजनाओं का सभी कार्मिकों के मध्य प्रचार करें इनमें स्वयं भाग लें व अधीनस्थों / सहकर्मियों को प्रतिभागिता हेतु प्रेरित किया जाए।
21. वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सदैव सजग रहें।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा) ने श्री अमरीश कुमार शर्मा, क्षेत्रीय निदेशक को मंच पर आमंत्रित किया। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय ने प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री रमेश लाल वर्मा का आमंत्रण स्वीकार करने तथा अपने अनुभव साझा करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने शाखा अधीक्षकों तथा शाखा प्रबंधकों द्वारा अपने कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए तथा सम्मेलन में सक्रिय सहभागिता के लिए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कार्यालय के कामकाज की काफी सराहना की गई। निःसंदेह हमारे कार्यालय में हिंदी में कामकाज की स्थिति काफी अच्छी है हिंदी में काम करना हमारे लिए गर्व की बात है। हिंदी सरल भाषा है, साथ ही सहज उपयोगी भी है। हिंदी इतनी सैद्धांतिक भाषा है कि इसमें जो बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है। उन्होंने कुछ विदेशी भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के उदाहरण दिए जिनके उच्चारण और वर्तनी में बहुत अंतर होता है। उन्होंने विकसित राष्ट्रों का उदाहरण देते हुए बताया कि हर विकसित राष्ट्र की अपनी राजभाषा है और वे सभी अपनी ही भाषा में कार्य करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जो विकास अपनी भाषा में हो सकता है वह दूसरे की भाषा में संभव नहीं है। आज हिंदी देश के कोने-कोने में बोली व समझी जाती है। अंग्रेजी केवल धारणा की भाषा है, उसे हमें अपनी धारणा से निकालना होगा। हमारा ध्यान हमेशा लक्ष्य पर केंद्रित होना चाहिए क्योंकि यदि हमारा ध्यान लक्ष्य पर होगा तो लक्ष्य की प्राप्ति भी अवश्य होगी। अतः हमें सदैव आगे बढ़ने का प्रण लेना चाहिए और जो कमियां रह गई हैं उनको दूर करने के भरसक प्रयास करने चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है कि इस सम्मेलन से हम सभी को एक नई ऊर्जा मिलेगी जिससे हम राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को और बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे। डॉ. सुगीत टंडन, चिकित्सा सतर्कता अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत सम्मेलन का समापन किया गया।



प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन कैमरे की नज़र से



राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह 2022 का आयोजन

मुख्यालय के निदेशानुसार राजभाषा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में दिनांक 14.09.2022 से दिनांक 29.09.2022 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के आरंभ होने से पहले ही एक परिपत्र जारी कर राजभाषा पखवाड़े का महत्व बताते हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर प्रतिभागिता करने का अनुरोध किया गया था। 14 सितंबर 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में प्रमुख स्थानों पर राजभाषा पखवाड़े के संबंध में आकर्षक बैनर, मुख्यालय से प्राप्त 'हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां' तथा जांच बिंदुओं के पोस्टर लगा दिए गए थे। पखवाड़े के दौरान राजभाषा कार्मिकों ने विभिन्न शाखाओं में संपर्क कर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्मिकों का सहयोग किया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार किया गया :-

| क्र.सं | दिनांक | प्रतियोगिता का नाम |
|--------|------------|------------------------------------|
| 1. | 21.09.2022 | हिंदी निबंध प्रतियोगिता |
| 2. | 22.09.2022 | हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता |
| 3. | 23.09.2022 | राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता |
| 4. | 26.09.2022 | वाक् प्रतियोगिता |

प्रतियोगिताओं के आयोजन के संबंध में पखवाड़ा शुरू होने से पहले ही सभी शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों/औषधालय-सह-शाखा कार्यालयों को क्षेत्रीय निदेशक महोदय का अनुमोदन प्राप्त कर एक परिपत्र जारी किया गया जिसमें पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं की सूचना दी गई थी तथा उसमें सभी कार्मिकों को भाग लेने व अपने नाम राजभाषा शाखा को यथासमय भेजने का अनुरोध किया गया था। प्रतियोगिताओं को क्षेत्रीय कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय की विभिन्न शाखाओं तथा शाखा कार्यालयों से विभिन्न कार्मिकों ने प्रतिभागिता की। विजेता प्रतिभागियों की सूची निम्नानुसार है :-



क्षेत्रीय निदेशक श्री अमरीश कुमार शर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 29.09.2022 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह स्थल पर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था। समारोह का शुभारंभ पंचदीप प्रज्जवलन से हुआ। क्षेत्रीय निदेशक श्री अमरीश कुमार शर्मा तथा अन्य अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्जवलित किया गया। इसके उपरांत सुश्री तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवाद



हिंदी निबंध प्रतियोगिता दिनांक 21.09.2022

| क्र.सं. | नाम व पदनाम (श्री/सुश्री) | पुरस्कार |
|---------|--|-----------------------|
| 1. | प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक | प्रथम पुरस्कार |
| 2. | नेही सैनी, प्रवर श्रेणी लिपिक | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | अमित बहादुर, सहायक | तृतीय पुरस्कार |
| 4. | संदीप कुमार श्रीवास्तव, शाखा प्रबंधक, शाखा कार्यालय, चंडीगढ़ | प्रोत्साहन पुरस्कार-1 |
| 5. | कृतिका शर्मा, सहायक | प्रोत्साहन पुरस्कार-2 |

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता दिनांक 22.09.2022

| क्र.सं. | नाम व पदनाम (श्री/सुश्री) | पुरस्कार |
|---------|--------------------------------------|-----------------------|
| 1. | कृतिका शर्मा, सहायक | प्रथम पुरस्कार |
| 2. | संजीव कुमार, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | मनीषा, सहायक | तृतीय पुरस्कार |
| 4. | अमित बहादुर, सहायक | प्रोत्साहन पुरस्कार-1 |
| 5. | प्रदीप कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक | प्रोत्साहन पुरस्कार-2 |

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता दिनांक 23.09.2021

| क्र.सं. | नाम व पदनाम (श्री/सुश्री) | पुरस्कार |
|---------|----------------------------------|-----------------------|
| 1. | सुनील कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक | प्रथम पुरस्कार |
| 2. | मनीषा, सहायक | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | कृतिका शर्मा, सहायक | तृतीय पुरस्कार |
| 4. | प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक | प्रोत्साहन पुरस्कार-1 |
| 5. | अमित बहादुर, सहायक | प्रोत्साहन पुरस्कार-2 |

हिंदी वाक् प्रतियोगिता दिनांक 26.09.2021

| क्र.सं. | नाम व पदनाम (श्री/सुश्री) | पुरस्कार |
|---------|--------------------------------------|-----------------------|
| 1. | संजीव कुमार, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी | प्रथम पुरस्कार |
| 2. | वजीर सिंह, सहायक | द्वितीय पुरस्कार |
| 3. | संदीप पांचाल, अवर श्रेणी लिपिक | तृतीय पुरस्कार |
| 4. | अमित बहादुर, सहायक | प्रोत्साहन पुरस्कार-1 |
| 5. | प्रवीण कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक | प्रोत्साहन पुरस्कार-2 |

अधिकारी, सुश्री नेहा भारद्वाज, प्रवर श्रेणी लिपिक, सुश्री श्वेता जसवाल, प्रवर श्रेणी लिपिक, सुश्री ज्योति, सूचना प्रौद्योगिकी सहायक तथा सुश्री खुशबू बत्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा ईश वंदना 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' प्रस्तुत की गई। मंच संचालन सुश्री तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं सुश्री नेहा भारद्वाज, प्रवर श्रेणी लिपिक ने संयुक्त रूप से किया। श्री राजेश शर्मा, उप निदेशक(रा.भा.) द्वारा अध्यक्ष महोदय का पुष्प देकर स्वागत किया गया।



कार्यक्रम के अगले चरण में हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए तथा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर इस बार अंतर्शाखायी राजभाषा चल शील्ड विधि शाखा को प्रदान की गई जिसे श्री ज्योति राम, सहायक निदेशक (विधि) तथा शाखा के अन्य कार्मिकों ने ग्रहण किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सुश्री नवदीप कौर, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे' गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् श्री मनसा राम, सहायक द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री विवेक कौशल, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'नहीं सीखा मैंने जीना जीना' हिंदी गीत प्रस्तुत किया गया उसके पश्चात् श्री अरविंद, सहायक द्वारा 'अहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तों' गीत गाया गया। तत्पश्चात् श्री संदीप पांचाल, अवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'हरियाणवी रागिनी' प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात् सुश्री शमशेर कौर, बहुकार्य स्टाफ द्वारा 'पंजाबी बोलियां' प्रस्तुत की गई जिसका सभी श्रोताओं द्वारा आनंद लिया गया। इसके बाद सुश्री नवदीप कौर, प्रवर श्रेणी लिपिक तथा श्री मनसा राम, सहायक द्वारा एक युगल गीत प्रस्तुत किया गया। श्री विवेक कौशल, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा 'भजन' प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंत में श्री सुशील सचदेवा, उप निदेशक (वित्त) द्वारा विशेष अनुरोध पर एक मनोहर गीत प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन किया गया।



तत्पश्चात् श्री प्रवीण सिंह, सचिव एसिक कर्मचारी संघ, पंजाब तथा डॉ. सुगीत टंडन, प्रतिनिधि, एसिक अधिकारी संघ, पंजाब ने अपने विचार रखे। उन्होंने राजभाषा पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए राजभाषा शाखा की उनके अथक प्रयासों के लिए सराहना की।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया जिसे सभी ने ध्यानपूर्वक संज्ञान में लिया। तत्पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी अत्यंत सहज तथा सरल भाषा है। इसे जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं। इसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। उन्होंने कहा कि सरल तथा सहज हिंदी का प्रयोग हमें हमारे कार्यालयीन कामकाज में करना चाहिए अर्थात् जो हम सहज भाव से सोचते हैं उन्हीं विचारों को हमें सहज भाव में ही लिखना चाहिए। उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से पुनः आग्रह किया कि वे अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करें व अपने स्तर पर राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

तत्पश्चात् श्री राजीव दीक्षित, अधिशाषी अभियंता ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी पखवाड़ा एवं राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह के सफल आयोजन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग की सराहना की। सामान्य शाखा का भी उनके सक्रिय सहयोग के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा इस कार्यक्रम के आयोजन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों के सहयोग की भी सराहना की। राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया।



पुरस्कार वितरण समारोह - 2022



स्वच्छ भारत
मिशन के
अंतर्गत
शाखा कार्यालय,
अबोहर, पंजाब
प्रथम पुरस्कार
से सम्मानित



सतलुजधाश 2022-23



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़